



कृष्टिकरण

Presentation Developed By: Smt Sarika Vikas Chhabra

मंगलाचरण



सिद्धे जिणिंदचंदे, आयरिय-उवज्झाय-साहुगणे ।
वंदिय सम्महंसण-चरित्तलद्धिं परूवेमो ॥1॥

कृष्टिकरण का सार

- प्रत्येक कषाय की 3-3 संग्रह कृष्टि बनती हैं ।
- एक एक संग्रह कृष्टि में अंतर कृष्टियों की संख्या एक वर्गणा शलाका का अनंतवा भाग होता है । यह भी संख्या में अनंत हैं ।
- एक कृष्टि से दूसरी कृष्टि में अनंत गुणा शक्ति होती है ।
- लोभ की प्रथम से क्रोध की तृतीय तक की कृष्टि में गोपुच्छ रहता है ।
- कृष्टि और स्पर्धकों में एक गोपुच्छ नहीं रहता है ।
- कृष्टिकरण के समय अपूर्व-पूर्व स्पर्धकों का उदय चलता है । बंध भी इन्हीं का होता है ।

कृष्टिकरण का सार

- जिसका द्रव्य अधिक होता है, उसमें कृष्टियाँ अधिक होती हैं । जिनका द्रव्य अल्प होता है, उनकी कृष्टियाँ भी अल्प होती हैं ।
- चूँकि क्रोध को नोकषाय का द्रव्य प्राप्त हुआ है, अतः क्रोध की कृष्टि सर्वाधिक होंगी ।
- यह नोकषाय का द्रव्य क्रोध की तृतीय संग्रह को प्राप्त होता है । इसलिए क्रोध में भी तृतीय संग्रह की कृष्टियाँ सर्वाधिक होती हैं ।
- नोकषाय संक्रमण द्रव्य को छोड़कर यदि देखा जाए, तो लोभ से क्रमशः मान का द्रव्य कम-कम होने से क्रमशः कृष्टियाँ अल्प-अल्प होती हैं । सबसे कम मान की तृतीय संग्रह कृष्टि में द्रव्य और कृष्टियाँ होती हैं ।

द्वितीय आदि समय

- प्रत्येक समय में अपकृष्ट द्रव्य असंख्यात गुणा होता है | नवीन बनायी जाने वाली कृष्टियों की संख्या पूर्व की कृष्टियों से असंख्यात गुणा हीन होती हैं |
- प्रत्येक संग्रह कृष्टि के नीचे अल्प शक्ति वाली अपूर्व अधस्तन कृष्टि बनायी जाती हैं |
- कृष्टि करण के समय बंध; स्पर्धक रूप रहने से बंध कृष्टियाँ नहीं हैं | स्पर्धकों में बंध द्रव्य का विभाग पूर्ववत ही रहता है |
- प्रत्येक समय कृष्टियों में द्रव्य देने पर भी और नवीन कृष्टि बनाने पर भी कृष्टियों में गोपुच्छ बना रहता है |
- गोपुच्छ बनाने के लिए अधस्तन शीर्ष आदि चार प्रकार का द्रव्य का विभाग बताया गया है |
- इस प्रकार अंतर्मुहूर्त तक कृष्टिकरण चलता है | कृष्टिकरण के अंत में स्पर्धक रूप द्रव्य समाप्त हो जाता है | सारा कषाय का द्रव्य कृष्टि में संक्रमित हो जाता है।

छक्कम्मे संछुद्धे, कोहे कोहस्स वेदगद्धा जा ।
तस्स य पढमतिभागो, होदि हु ह्यकण्णकरणद्धा ॥491॥
विदियतिभागो किट्टीकरणद्धा किट्टिवेदगद्धा हु।
तदियतिभागो किट्टीकरणो ह्यकण्णकरणं च ॥492॥

- अन्वयार्थः (छक्कम्मे कोहे संछुद्धे) छह नोकषायों का क्रोध में संक्रमण होने पर (जा कोहस्स वेदगद्धा) जो क्रोध का वेदककाल शेष है
 - (तस्स य पढमतिभागो) उसका प्रथम त्रिभाग (ह्यकण्णकरणद्धा) अश्वकर्णकरणकाल (होदि हु) है ।
 - (विदियतिभागो) उसका दूसरा त्रिभाग (किट्टीकरणद्धा) कृष्टिकरणकाल है (च) और
 - (तदियतिभागो) तीसरा त्रिभाग (किट्टिवेदगद्धा हु) कृष्टिवेदककाल है।
- (किट्टीकरणो ह्यकण्णकरणं) कृष्टिकरणकाल भी अश्वकर्णकरणरूप है ॥491-492॥

कृष्टिकरण काल

अपूर्व-
स्पर्धककरण
काल के
अनंतर समय
से कृष्टिकरण
काल प्रारंभ
होता है ।

जिस करण
द्वारा कर्म का
अनुभाग कृष
अर्थात् हीन
किया जाता
है, उसे
कृष्टिकरण
कहते हैं ।

कृष्टि दो प्रकार की है

बादर

स्पर्धकों का अनुभाग
अनंतगुणा हीन करके
स्थूल खंड करते हैं,
उसे बादरकृष्टिकरण
कहते हैं ।

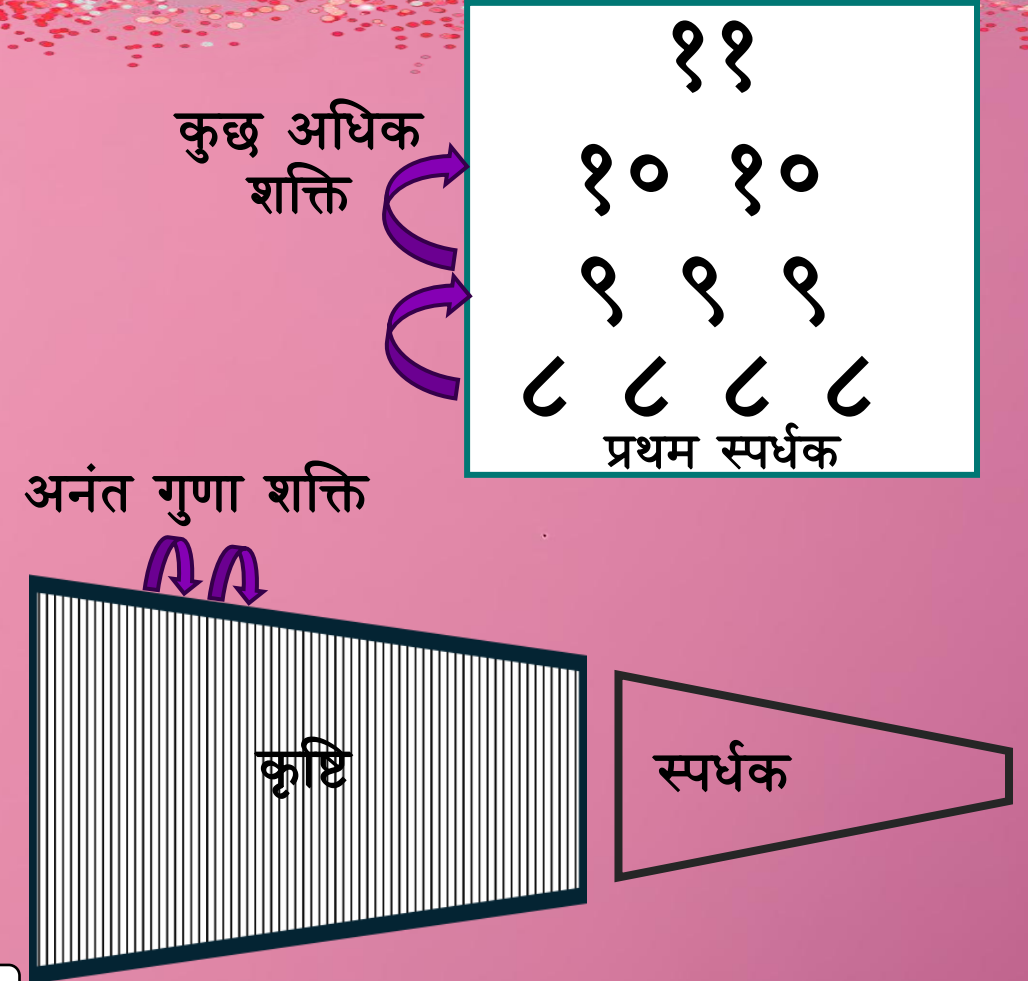
सूक्ष्म

इन स्थूल खंडों का
अनुभाग अनंतगुणा
हीन करके सूक्ष्म खंड
करते हैं, उसे
सूक्ष्मकृष्टिकरण कहते
हैं ।

स्पर्धक व कृष्टि में अन्तर

एक स्पर्धक से दूसरे स्पर्धक का अनुभाग थोड़ा ही अधिक है,

जबकि एक कृष्टि से दूसरी कृष्टि का अनुभाग अनन्त गुणा है ।



6 नोकषाय का क्रोध में संक्रमण होने के बाद जो क्रोधवेदक काल है, उसके 3 भाग हैं -

प्रथम त्रिभाग	अश्वकर्णकरण काल	$\frac{\text{क्रोधवेदक}}{3} +$
द्वितीय त्रिभाग	कृष्टिकरण काल	$\frac{\text{क्रोधवेदक}}{3} -$
तृतीय त्रिभाग	कृष्टिवेदक काल	$\frac{\text{क्रोधवेदक}}{3} =$

विशेष यह है कि ये तीनों काल सदृश नहीं हैं। पूर्व से आगे का त्रिभाग कुछ कम है।

इस कृष्टिकरणकाल में भी अश्वकर्णकरण है क्योंकि संज्वलन कषायों का अनुभाग-सत्त्व व कांडक पूर्ववत् प्रवृत्त है। परंतु यहाँ पर अपूर्व स्पर्धकों की नवीन रचना नहीं है।

यहाँ संज्वलन-4 का (8 वर्ष - अंतर्मुहूर्त) प्रमाण स्थिति-बंध होता है। शेष कर्मों का संख्यात गुणाहीन स्थिति-बंध होता है।

घातिया का सत्त्व पूर्व से संख्यात गुणाहीन और अघातिया का सत्त्व असंख्यात गुणाहीन होता है।

कोहादीणं सगसग-पुव्वापुव्वगदफड्डुयेहिंतो ।
उक्कड्डिदूण दव्वं, ताणं किट्ठीं करेदि कमे ॥493॥
उक्कट्ठिददव्वस्स य, पल्लासंखेज्जभागबहुभागो ।
बादरकिट्ठिणिबद्धो, फड्डुयगे सेसइगिभागो ॥494॥

- अन्वयार्थः (कोहादीणं) संज्वलन क्रोधादिकों के (सगसगपुव्वापुव्वगद-फड्डुयेहिंतो) अपने-अपने पूर्व और अपूर्व स्पर्धकों में से (दव्वं) द्रव्य का (उक्कड्डिदूण) अपकर्षण करके (कमे) क्रम से (ताणं) उनकी (किट्ठीं) कृष्टियाँ (करेदि) करता है।
- (उक्कट्ठिद-दव्वस्स य) अपकर्षित द्रव्य को (पल्लासंखेज्जभाग-बहुभागो) पल्य के असंख्यातवें भाग से भाग देकर आया हुआ बहुभाग (बादरकिट्ठिणिबद्धो) बादरकृष्टि संबंधी है।
- (सेसइगिभागो) अवशेष एकभाग (फड्डुयगे) स्पर्धकों में दिया जाता है ॥493-494॥

संज्वलन क्रोध आदि के अपने-अपने पूर्व-अपूर्व स्पर्धकों में से द्रव्य का अपकर्षण करके क्रम से बादर कृष्टि करता है ।

अपकर्षित द्रव्य का असंख्यात बहुभाग बादरकृष्टि संबंधित है । शेष एक भाग स्पर्धकों में दिया जाता है ।

सत्त्व द्रव्य व १२+

अपकर्षित द्रव्य $\frac{व १२+}{ओ}$

असंख्यात बहुभाग द्रव्य

असंख्यातवां भाग

$\frac{अपकर्षित द्रव्य \times (प / ओ - 1)}{पल्य / ओ}$

$\frac{अपकर्षित द्रव्य}{पल्य / ओ}$

कृष्टि हेतु

स्पर्धक हेतु

किट्टीओ इगिफड्डुयवग्गण संखाणणंतभागो दु ।
एक्केक्कम्हि कसाये, तिगतिग अहवा अणंता वा ॥495॥

- अन्वयार्थः (किट्टीओ) कृष्टियों की संख्या (इगिफड्डुयवग्गण-संखाणणंतभागो दु) एक स्पर्धक की वर्गणा संख्या का अनन्तवां भाग है।
- (एक्केक्कम्हि कसाये) एक-एक कषाय में (तिगतिग) तीन-तीन (अहवा) अथवा (अणंता वा) अनन्त कृष्टियाँ होती हैं ॥495॥

कृष्टियों की संख्या

एक स्पर्धक में जितनी वर्गणाएँ होती हैं, उनके अनंतवें भाग प्रमाण सर्व कृष्टियों का प्रमाण है ।

इन सर्व कृष्टियों की संख्या अनंत है ।

एक-एक कषाय में 3-3 संग्रह कृष्टि हैं । एक-एक संग्रह कृष्टि में अनंत-अनंत अवयव-कृष्टि (अंतर कृष्टि) है ।

जहाँ समान गुणकार से अविभागप्रतिच्छेद बढ़ते जाते हैं, वहाँ तक की कृष्टियाँ अवयव-कृष्टि कहलाती है ।

जहाँ एक कृष्टि से दूसरी कृष्टि का गुणकार बदलता है, वहाँ संग्रहकृष्टि बदलती है ।

यहाँ प्रत्येक कृष्टि से ऊपर की कृष्टि अनंतगुणा शक्ति वाली है ।

इन कृष्टियों का क्रम नीचे से ऊपर तक इस प्रकार है -

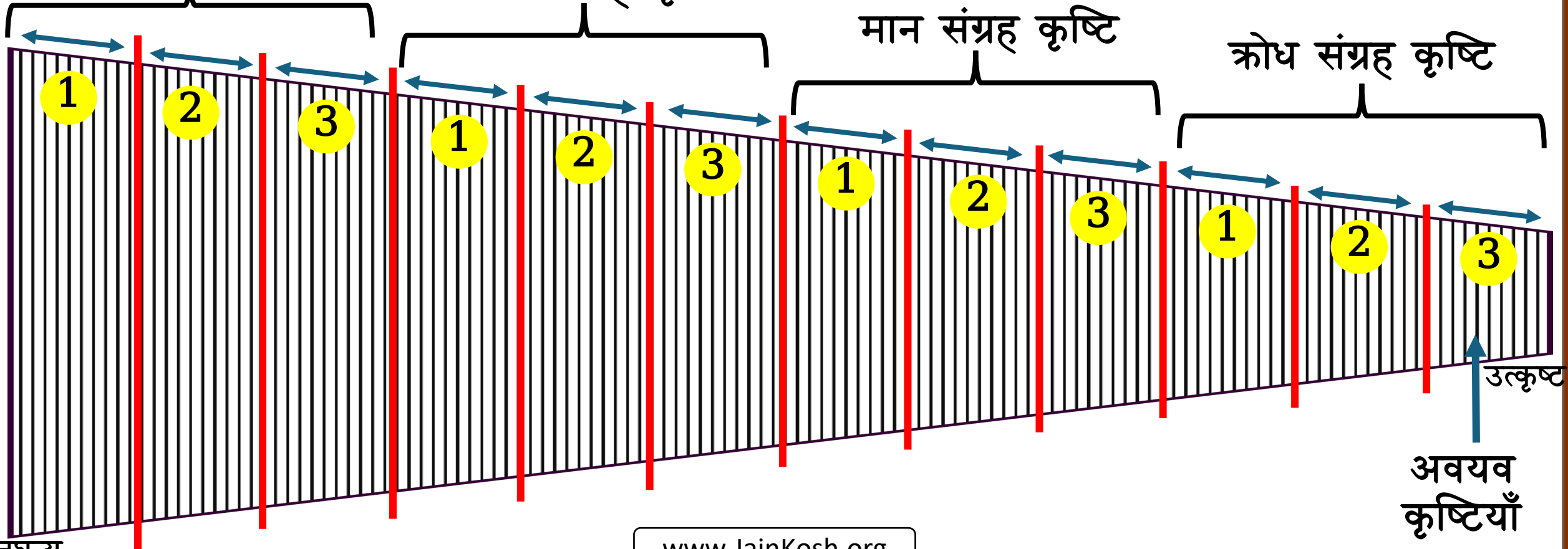
सबसे नीचे जो कृष्टि है, उसका अनुभाग सबसे कम है। इसके ऊपर प्रत्येक कृष्टि में अनुभाग अनंतगुणा है। सबसे अंतिम कृष्टि में सर्वाधिक अनुभाग है।

लोभ संग्रह कृष्टि

माया संग्रह कृष्टि

मान संग्रह कृष्टि

क्रोध संग्रह कृष्टि



अकसायकसायाणं, दव्वस्स विभंजणं जहा होई।
किट्टिस्स तहेव हवे, कोहो अकसायपडिबद्धं ॥496॥

- अन्वयार्थः (जहा) जिस प्रकार (अकसायकसायाणं) अकषाय अर्थात् नोकषाय और कषायों के (दव्वस्स) द्रव्य का (विभंजणं) विभाजन (होई) होता है, (तहेव) उसी प्रकार (किट्टिस्स) कृष्टियों के द्रव्य का विभाजन होता है।
- (अकसायपडिबद्धं) अकषायसंबंधी द्रव्य (कोहो) क्रोधरूप अर्थात् क्रोध कृष्टि में सम्मिलित (हवे) होता है ॥496॥

कृष्टियों का द्रव्य विभाग

जिस प्रकार प्रदेश-बंध के बंटवारे में चारित्र मोहनीय के देशघाति द्रव्य का बंटवारा कषाय और नोकषाय में किया जाता है, वैसे ही यहाँ कृष्टि द्रव्य का विभाग लोभादिक कृष्टियों में करेंगे ।

वहाँ चारित्र मोहनीय का देशघाति द्रव्य; साधिक अर्धभाग कषाय को एवं कुछ कम अर्धभाग नोकषाय को जाता है । वैसे ही यहाँ साधिक चतुर्थ भाग लोभ को एवं कुछ-कुछ कम चतुर्थ भाग क्रमशः माया, क्रोध, मान को प्राप्त होगा ।

चारित्र मोहनीय का द्रव्य = प्रथम वर्गणा ×
 $\frac{3}{2}$ गुणहानि+ = व १२+

इसमें नोकषाय का द्रव्य कुछ कम आधा है
एवं साधिक आधा 4 कषाय का द्रव्य है ।

4 कषाय द्रव्य

$$\frac{\text{व १२+}}{2} +$$

नोकषाय द्रव्य

$$\frac{\text{व १२+}}{2} -$$

प्रत्येक कषाय
का द्रव्य

लोभ

$$\frac{\text{व १२+}}{4 \times 2} +$$

माया

$$\frac{\text{व १२+}}{4 \times 2} -$$

मान

$$\frac{\text{व १२+}}{4 \times 2} \equiv$$

क्रोध

$$\frac{\text{व १२+}}{4 \times 2} =$$

नोकषाय का सारा द्रव्य
क्रोध को प्राप्त हुआ है ।
अतः क्रोध का द्रव्य अब
इतना है -

$$\frac{व१२+}{8} + \frac{व१२+}{2}$$

$$= \frac{व१२+}{8} + \frac{व१२+ \times 4}{2 \times 4} = \frac{व१२+ | 5}{8}$$

प्रत्येक कषाय में से अपकृष्ट द्रव्य

लोभ	माया	मान	क्रोध
$\frac{व१२+}{8 \times ओ} +$	$\frac{व१२+}{8 \times ओ} -$	$\frac{व१२+}{8 \times ओ} \equiv$	$\frac{व१२+ 5}{8 \times ओ} =$

इस अपकृष्ट द्रव्य में $\frac{५}{७}$ भाग द्रव्य पूर्व-अपूर्व स्पर्धकों में देय है ।
शेष बहुभाग द्रव्य कृष्टियों हेतु है ।

3 संग्रह कृष्टियों का द्रव्य

कृष्टि-योग्य द्रव्य को तीन संग्रह कृष्टियों में देना है ।

यहाँ द्रव्य का विभाग पुनः एकभाग पृथक् करके बहुभाग के तीन समभाग, एकभाग के बहुभाग-एकभाग आदि विधान से करेंगे ।

इससे प्रथम कृष्टि में साधिक तृतीय भाग, शेष दो कृष्टियों में कुछ कम तृतीय भाग द्रव्य प्राप्त होगा ।

प्रथम संग्रह	द्वितीय संग्रह	तृतीय संग्रह
$\frac{व १२+}{8 \times ओ । 3}^{+}$	$\frac{व १२+}{8 \times ओ । 3}^{-}$	$\frac{व १२+}{8 \times ओ । 3}^{=}$

इसी प्रकार माया, मान, क्रोध की भी संग्रह कृष्टियों का द्रव्य विभाजित होता है ।

क्रोध की तीसरी संग्रह कृष्टि

जो नोकषाय का सारा द्रव्य संज्वलन क्रोध में संक्रमित हुआ है, उसके द्वारा क्रोध की तीसरी संग्रह कृष्टि रची जाती है। अतः क्रोध की तीसरी संग्रह कृष्टि का द्रव्य होगा -

$$\frac{व१२+}{८ \times ओ \times ३} = + \frac{व१२+}{२ \times ओ}$$

$$= \frac{व१२+}{८ \times ओ \times ३} = + \frac{व१२+ \times १२}{२ \times ओ \times १२} = \frac{व१२+ | १३}{२४ \times ओ}$$

कृष्टियों के प्रमाण का विभाग

$$\text{सर्व कृष्टियों का प्रमाण} = \frac{\text{स्पर्धक शलाका}}{\text{अनंत}} + = \frac{8}{\text{ख}} +$$

जिस प्रकार द्रव्य का विभाग क्रम से एकभाग, बहुभाग विधान से किया है, उसी प्रकार कृष्टियों का विभाग भी जानना चाहिए ।

$$\text{कषाय द्रव्य से रचित कृष्टियाँ} = \frac{8}{\text{ख} \times 2} +$$

$$\text{नोकषाय द्रव्य से रचित कृष्टियाँ} = \frac{8}{\text{ख} \times 2} -$$

यहाँ प्रत्येक की पहली से दूसरी, दूसरी से तीसरी संग्रह में कृष्टियों एवं द्रव्य का प्रमाण कुछ हीन जानना चाहिए ।

क्रोध की तीसरी संग्रह कृष्टि में नोकषाय का सर्व द्रव्य प्राप्त होने से उसका द्रव्य एवं कृष्टियों का प्रमाण लगभग 24 भाग में से 13 भाग प्रमाण होता है ।

प्रत्येक कषाय में
रचित कृष्टियाँ

इसमें से एक-एक की
संग्रह कृष्टियों में रचित
कृष्टियाँ

नोकषाय के द्रव्य से रची
कृष्टियाँ क्रोध की तीसरी
संग्रह कृष्टि में रची जाती
है। अतः क्रोध की
तीसरी संग्रह की कृष्टियाँ

लोभ	माया	मान	क्रोध
$\frac{४}{ख \times ८} +$	$\frac{४}{ख \times ८} -$	$\frac{४}{ख \times ८} \equiv$	$\frac{४}{ख \times ८} =$

प्रथम संग्रह	द्वितीय संग्रह	तृतीय संग्रह
$\frac{४}{ख \times ८ \times ३} +$	$\frac{४}{ख \times ८ \times ३} -$	$\frac{४}{ख \times ८ \times ३} =$

$$\frac{४}{ख \times २४} + \frac{४}{ख \times २}$$

$$\frac{४}{ख \times २४} + \frac{४ \times १२}{ख \times २ \times १२} = \frac{४ \mid १३}{ख \times २४}$$

इस प्रकार कृष्टि द्रव्य और कृष्टियाँ इतनी हैं -

	लोभ			माया		
	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
द्रव्य	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ}^+$	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ}^+$	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ}^+$	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ}^-$	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ}^-$	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ}^-$
कृष्टि	$\frac{४}{ख \times 24}^+$	$\frac{४}{ख \times 24}^+$	$\frac{४}{ख \times 24}^+$	$\frac{४}{ख \times 24}^-$	$\frac{४}{ख \times 24}^-$	$\frac{४}{ख \times 24}^-$

	मान			क्रोध		
	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
द्रव्य	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ} \equiv$	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ} \equiv$	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ} \equiv$	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ} =$	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ} =$	$\frac{व\ १२+ 13}{24 \times ओ} =$
कृष्टि प्रमाण	$\frac{४}{ख \times 24} \equiv$	$\frac{४}{ख \times 24} \equiv$	$\frac{४}{ख \times 24} \equiv$	$\frac{४}{ख \times 24} =$	$\frac{४}{ख \times 24} =$	$\frac{४ \times 13}{ख \times 24} =$

कृष्टि द्रव्य, संख्या का अल्प-बहुत्व

कृष्टि	अल्प-बहुत्व
मान संज्वलन – तृतीय कृष्टि	स्तोक
मान संज्वलन – द्वितीय कृष्टि	+
मान संज्वलन – प्रथम कृष्टि	+
क्रोध संज्वलन – द्वितीय कृष्टि	+
क्रोध संज्वलन – प्रथम कृष्टि	+
माया संज्वलन – तृतीय कृष्टि	+
माया संज्वलन – द्वितीय कृष्टि	+
माया संज्वलन – प्रथम कृष्टि	+
लोभ संज्वलन – तृतीय कृष्टि	+
लोभ संज्वलन – द्वितीय कृष्टि	+
लोभ संज्वलन – प्रथम कृष्टि	+
क्रोध संज्वलन – तृतीय कृष्टि	संख्यात गुणा

पढमादिसंगहाओ, पल्लासंखेज्जभागहीणाओ ।
कोहस्स तदीयाए, अकसायाणं तु किट्टीओ ॥497॥

- अन्वयार्थः (पढमादिसंगहाओ) प्रथमादि बारह संग्रह कृष्टियों का आयाम (पल्लासंखेज्जभागहीणाओ) पल्य के असंख्यातवें भाग से घटता क्रम है ।
- (अकसायाणं तु किट्टीओ) नोकषाय संबंधी कृष्टियाँ (कोहस्स तदीयाए) क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि में हैं ॥497॥

कृष्टियों के प्रमाण का अल्प-बहुत्व

नोकषाय के द्रव्य की कृष्टियों को छोड़कर विचार करने पर

लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि	सर्वाधिक
लोभ की दूसरी संग्रह कृष्टि	पूर्व से $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ भाग कम
लोभ की तीसरी संग्रह कृष्टि	पूर्व से $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ भाग कम
माया की प्रथम संग्रह कृष्टि	पूर्व से $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ भाग कम

इस प्रकार क्रम से क्रोध की तीसरी संग्रह कृष्टि तक जाना ।

नोकषाय के द्रव्य की सारी कृष्टियाँ क्रोध की तीसरी संग्रह कृष्टि में है ।
अतः वहाँ सर्वाधिक द्रव्य एवं कृष्टियाँ हैं ।

कोहस्स य माणस्स य मायालोभोदएण चडिदस्स ।
बारस णव छत्तिणि य, संगहकिट्ठी कमे होंति ॥498॥

- अन्वयार्थः (कोहस्स य माणस्स य मायालोभोदएण चडिदस्स) क्रोध, मान, माया और लोभ के उदय से श्रेणी चढ़नेवाले जीव के (कमे) क्रम से (बारस णव छत्तिणि य) बारह, नौ, छः और तीन (संगहकिट्ठी) संग्रह-कृष्टियाँ (होंति) होती हैं ॥498॥

संग्रह कृष्टि संख्या

जिस कषाय के उदय से श्रेणी आरोहण होता है, उस कषाय से लेकर आगे तक की कषायों की कृष्टियाँ बनती हैं।

यदि आगे की कषाय से श्रेणी आरोहण करता है, तो पूर्व की कषायों की कृष्टियाँ नहीं बनायी जाती। क्योंकि कृष्टिकरण के पूर्व ही उनका क्षय कर दिया जाता है।

अतः इतनी कृष्टियाँ भिन्न-भिन्न उदय में बनती हैं -

श्रेणी आरोहण कषाय	कृष्टि संख्या	किसकी
क्रोध	12	चारों कषाय में
मान	9	मान, माया, लोभ
माया	6	माया, लोभ
लोभ	3	लोभ

संगहगे एक्केक्के, अंतरकिट्टी हवदि हु अणंता ।
लोभादि अणंतगुणा, कोहादि अणंतगुणहीणा ॥499॥

- अन्वयार्थः (एक्केक्के) एक-एक (संगहगे) संग्रह-कृष्टि में (अंतरकिट्टी) अन्तरकृष्टियाँ (अवान्तर कृष्टियाँ) (हु अणंता) वास्तविक अनन्त (हवदि) हैं। उनमें (लोभादि अणंतगुणा) लोभ से लेकर अनन्तगुणा और (कोहादि अणंतगुणहीणा) क्रोध से लेकर अनन्तगुणा हीन अनुभाग है ॥499॥

क्रोध, मान, माया,
लोभ – इन चारों
कषायों की 3-3 संग्रह
कृष्टियाँ होती हैं। इस
प्रकार 12 संग्रह कृष्टि
होती हैं।

प्रत्येक संग्रह कृष्टि में
अवांतर कृष्टियाँ
अभव्यों से अनंतगुणी
और $\frac{\text{सिद्धराशि}}{\text{अनंत}}$ प्रमाण
होती हैं।



कृष्टियों की शक्ति

लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि में अनुभाग सबसे अल्प है ।

इससे अगली कृष्टि में अनुभाग अनंत गुणा है ।

इससे आगे क्रोध की अंतिम कृष्टि तक अनुभाग अनंत गुणा है ।

इसी को विपरीत क्रम से देखने पर –

क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि की अंतिम कृष्टि में अनुभाग सबसे अधिक है ।

इससे द्विचरम कृष्टि का अनुभाग अनंत गुणा हीन है ।

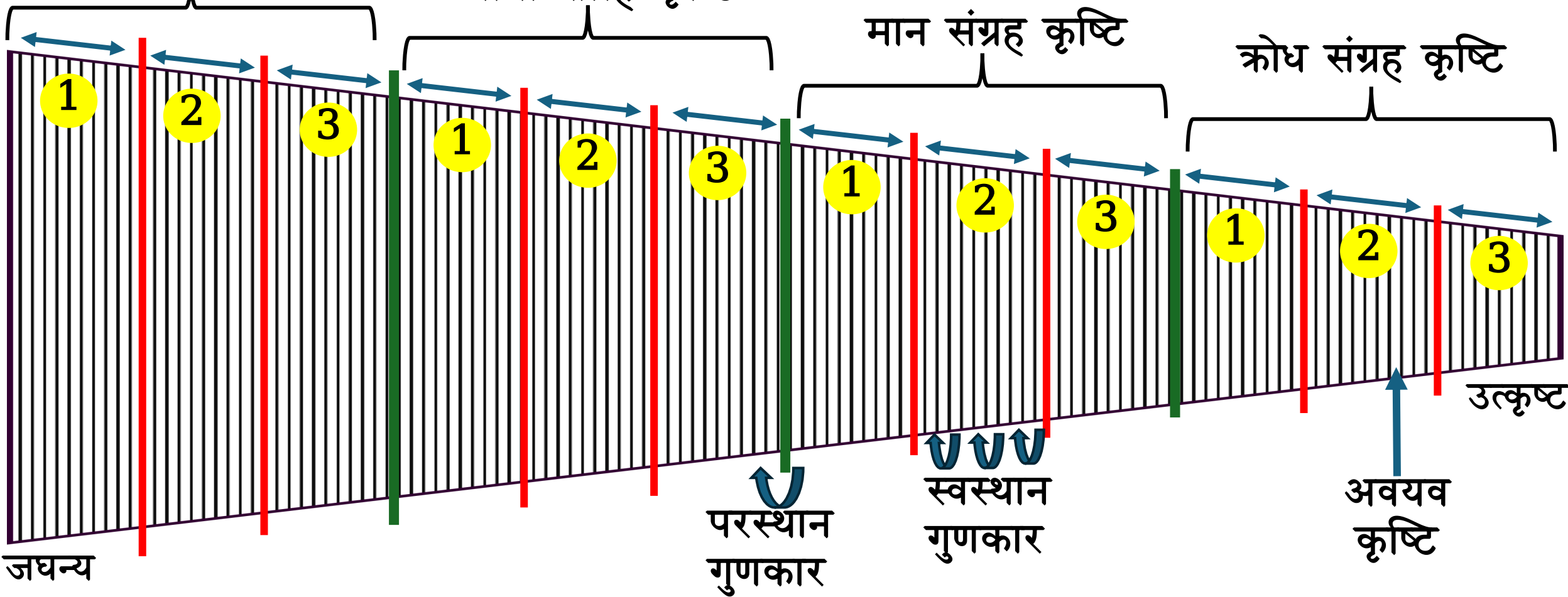
इस प्रकार नीचे प्रत्येक कृष्टि में अनुभाग अनंत गुणा हीन है ।

लोभ संग्रह कृष्टि

माया संग्रह कृष्टि

मान संग्रह कृष्टि

क्रोध संग्रह कृष्टि




प्रत्येक कृष्टि में अनंत गुणा बढ़ता अनुभाग

प्रत्येक कृष्टि में अनंतगुणाहीन अनुभाग

लोभादी कोहोत्ति य, सद्गुणंतरमणंतगुणिदकमं ।
तत्तो बादरसंगहकिट्टी अंतरमणंतगुणिदकमं ॥500॥

- अन्वयार्थः (लोभादी कोहोत्ति य) लोभ से लेकर क्रोध तक (सद्गुणंतरं) स्वस्थान अंतर (अणंतगुणिदकमं) क्रम से अनन्तगुणित है।
- (तत्तो) उस स्वस्थान अंतर से (बादरसंगहकिट्टी अंतरं) बादर संग्रह-कृष्टि का अन्तर (अणंत गुणिदकमं) अनन्तगुणा क्रमरूप है ॥500॥



कृष्टियों का गुणकार

एक अंतर कृष्टि की शक्ति से अगली अंतर कृष्टि की शक्ति के अंतर को कृष्टि-अंतर कहते हैं ।

संग्रह कृष्टि के 11 अंतरालों में रची गयी कृष्टियों की शक्ति के अंतर को संग्रह कृष्टि-अंतर कहते हैं ।

कृष्टि अंतर का गुणकार 'स्वस्थान गुणकार' तथा संग्रह-कृष्टि अंतर का गुणकार 'परस्थान गुणकार' कहलाता है ।

यहाँ 12 संग्रह कृष्टि है, तो कुल परस्थान गुणकार 11 होंगे क्योंकि दो के बीच में एक गुणकार होता है, तीन के बीच में दो गुणकार होते हैं, अतः 12 संग्रह के अंतराल में 11 स्थान होंगे ।

इसी प्रकार एक संग्रह कृष्टि में जितनी अंतर-कृष्टियाँ हैं उनके बीच स्वस्थान गुणकार (अंतर कृष्टि - 1) प्रमाण होंगे ।

यहाँ 1 संग्रह कृष्टि की अंतर-कृष्टियों में परस्पर में गुणकार अनंत गुणा बढ़ता जाता है । प्रत्येक अंतर कृष्टि का गुणकार भिन्न होता जाता है ।

मानाकि अनंत = 2, एक संग्रहकृष्टि में
अवयव-कृष्टि = 4

जघन्य कृष्टि के अनुभाग से आगे
अनंतगुणा अनुभाग है । तो द्वितीय कृष्टि
का स्वस्थान गुणकार = 2

तृतीय कृष्टि का इससे भी अनंत गुणा
गुणकार = $2 \times 2 = 4$

चौथी कृष्टि का इससे भी अनंत गुणा
गुणकार = $4 \times 2 = 8$

इस प्रकार लोभ की
प्रथम संग्रहकृष्टि के
गुणकार निम्न प्रकार
दिखे -

चतुर्थ	8
तृतीय	4
द्वितीय	2
प्रथम	ज

अब इससे आगे लोभ
की द्वितीय संग्रह
कृष्टि की प्रथम
अवयव कृष्टि है ।
यहाँ परस्थान गुणकार
होता है । वह सारे
स्वस्थान गुणकार से
भी अनंतगुणा है ।
इसलिये उसे छोड़कर
आगे की अवयव
कृष्टियों के गुणकार
लाते हैं -

पूर्व के स्वस्थान गुणकार से यहाँ स्वस्थान गुणकार
अनंत गुणा है । अतः लोभ की द्वितीय संग्रह की
दूसरी कृष्टि का गुणकार $8 \times 2 = 16$, तीसरी का
 $16 \times 2 = 32$, चौथी का $32 \times 2 = 64$ गुणकार
हुआ ।

पुनः इसके आगे परस्थान गुणकार को छोड़कर तीसरे
संग्रह की दूसरी आदि कृष्टियों का गुणकार क्रमशः
128, 256, 512 होता है ।

इस प्रकार यह लोभ की तीनों कृष्टियों के स्वस्थान
गुणकार स्थापित किये ।

परस्थान गुणकार

इसी प्रकार इसके आगे माया, मान, क्रोध की अवयव कृष्टियों के गुणकार लाने चाहिए ।
ऐसा करने पर क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि की अंतिम चतुर्थ कृष्टि में गुणकार $42 = \times 16$ होता है ।

इस अंतिम स्वस्थान गुणकार से प्रथम परस्थान गुणकार अनंत गुणा है । प्रथम परस्थान गुणकार $42 = \times 32$; इसे क्रमशः अनंत-अनंत से गुणा करने पर शेष 10 परस्थान गुणकार होते हैं ।

अंतिम परस्थान गुणकार $42 = \times 32768$ होता है ।

इससे अनंतगुणे गुणकार से क्रोध की तृतीय संग्रह की अंतिम कृष्टि को गुणित करने पर लोभ के जघन्य अपूर्वस्पर्धक की आदि वर्गणा के अविभाग-प्रतिच्छेद का प्रमाण होते है ।

कृष्टियों के गुणकार

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
तृतीय संग्रहकृष्टि में स्वस्थान गुणकार	512 (9) 256 (8) 128 (7)	65 = x 4 (18) 65 = x 2 (17) 65 = x 1 (16)	65 = x 2048 (27) 65 = x 1024 (26) 65 = x 512 (25)	42 = x 16 (36) 42 = x 8 (35) 42 = x 4 (34)
परस्थान गुणकार	42 = x 64 (38)	42 = x 512 (41)	42 = x 4096 (44)	42 = x 32768 (47)
द्वितीय संग्रहकृष्टि में स्वस्थान गुणकार	64 (6) 32 (5) 16 (4)	32768 (15) 16384 (14) 8192 (13)	65 = x 256 (24) 65 = x 128 (23) 65 = x 64 (22)	42 = x 2 (33) 42 = x 1 (32) 65 = x 32768 (31)
परस्थान गुणकार	42 = x 32 (37)	42 = x 256 (40)	42 = x 2048 (43)	42 = x 16384 (46)
प्रथम संग्रहकृष्टि में स्वस्थान गुणकार	8 (3) = 80 4 (2) = 40 2 (1) = 20	4096 (12) 2048 (11) 1024 (10)	65 = x 32 (21) 65 = x 16 (20) 65 = x 8 (19)	65 = x 16384 (30) 65 = x 8192 (29) 65 = x 4096 (28)
परस्थान गुणकार	जघन्यकृष्टि	42 = x 128 (39)	42 = x 1024 (42)	42 = x 8192 (45)

गुणकारों का भावार्थ

लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि का अनुभाग स्वल्प है ।

उससे द्वितीय का 2 गुणा, तृतीय का 4 गुणा, चतुर्थ का 8 गुणा है ।

उससे लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि की प्रथम कृष्टि का अनुभाग $42 = \times 32$ गुणा है ।

इससे द्वितीय का 16 गुणा, तृतीय का 32 गुणा, चतुर्थ का 64 गुणा अनुभाग है ।

इस प्रकार परस्थान गुणकार पूर्व के गुणकार से अन्य प्रकार ही हुआ । इसलिए यहाँ से द्वितीय संग्रह कृष्टि कही ।

इसी प्रकार अंत तक जानना ।

वास्तविक गणित में दो की जगह अनंत और 4 कृष्टियों के प्रमाण के स्थान पर अनंत जानना ।

लोहस्स अवरकिट्टीगदव्वादो कोधजेट्टुकिट्टिस्स ।
दव्वोत्ति य हीणकमं, देदि अणंतेण भागेण ॥501॥

- अन्वयार्थः (लोहस्स अवरकिट्टीगदव्वादो) लोभ की जघन्य कृष्टि के द्रव्य से (कोधजेट्टुकिट्टिस्स दव्वोत्ति) क्रोध की उत्कृष्ट कृष्टि के द्रव्य तक (अणंतेण भागेण) अनन्तवें भाग से (हीणकमं) हीन-हीन द्रव्य क्रम से (देदि) देता है ॥501॥

कृष्टियों में अपकृष्ट द्रव्य का विभाग

प्रथम समय कृष्टिकारक; अपकृष्ट द्रव्य ($\frac{व १२+}{ओ}$) का बहुभाग कृष्टियों में देता है ।

कृष्टियों का प्रमाण $\frac{४}{ख}$ है ।

चूँकि यह एक गुणहानि प्रमाण आयाम नहीं है । इसलिये इसे मध्यमखंड आदि विधान से चयहीन क्रम से देता है ।

सबसे अधिक द्रव्य लोभ की प्रथम संग्रहकृष्टि की जघन्य कृष्टि में देता है ।

इससे आगे एक-एक चयहीन क्रम से क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि की अंतिम कृष्टि तक द्रव्य देता है ।

यह चयहीन द्रव्य अनंतवां भाग हीन द्रव्य है । अर्थात् $\frac{\text{पूर्व कृष्टि द्रव्य}}{\text{अनंत}}$ इतना कम ऊपर की कृष्टि के द्रव्य का प्रमाण है ।

लोभस्स अवरकिट्टिगदव्वादो कोधजेट्टुकिट्टिस्स ।
दव्वं तु होदि हीणं, अणंतभागेण जोगेण ॥502॥

- अन्वयार्थः (लोभस्स अवरकिट्टिगदव्वादो) लोभ की जघन्य कृष्टि के द्रव्य से (कोधजेट्टुकिट्टिस्स) क्रोध की उत्कृष्ट कृष्टि का (दव्वं तु) द्रव्य (अणंतभागेण जोगेण) अनन्तवें भाग से (हीणं) हीन (होदि) है ॥502॥

कृष्टियों में चयहीन द्रव्य

प्रत्येक कृष्टि में तो अनंतभागहीन द्रव्य है ही; परंतु लोभ की प्रथम कृष्टि से क्रोध की अंतिम कृष्टि में भी द्रव्य अनंतभाग ही हीन है ।

$$\text{हीन द्रव्य प्रमाण} = \frac{\text{लोभ प्रथम कृष्टि}}{\text{अनंत}}$$

$$\text{क्रोध की अंतिम कृष्टि} = \text{लोभ प्रथम कृष्टि} - \text{हीन द्रव्य}$$

$$\text{यह हीन द्रव्य कितना है ?} = \text{चय} \times (\text{गच्छ} - 1)$$

यह द्रव्य लोभ की प्रथम कृष्टि का अनंतवां भाग है ।

यहाँ एक गुणहानि आयाम भी घटाते हुए नहीं गए हैं । इसलिये द्रव्य असंख्यात या संख्यातभागहीन तक भी नहीं हुआ है । अंतिम कृष्टि का द्रव्य मात्र अनंतभागहीन ही है ।

अपकृष्ट द्रव्य का एकभाग

अपकृष्ट द्रव्य का एकभाग मात्र द्रव्य पूर्व-अपूर्व स्पर्धकों में दिया जाता है ।

इस एकभाग $\frac{व१२+}{ओ०प०}$ को साधिक डेढ़ गुणहानि से भाग देने पर अपूर्वस्पर्धक की जघन्य वर्गणा में देय द्रव्य का प्रमाण आता है । यह क्रोध की अंतिम कृष्टि में दिये द्रव्य का असंख्यातवां भागमात्र द्रव्य है ।

इसके आगे पूर्व स्पर्धक की अंतिम देय वर्गणा तक एक-एक चयहीन क्रम से द्रव्य दिया जाता है ।

अंक संदृष्टि – सर्व कृष्टि हेतु द्रव्य = 13920, गच्छ = 48

$$\text{मध्यमधन} = \frac{\text{सर्वधन}}{\text{गच्छ}}$$

$$\frac{13920}{48} = 290$$

पडिसमयमसंखगुणं, क्रमेण उक्कट्टिदूण दब्बं खु ।
संगहहेट्टापासे, अपुव्वकिट्टी करेदी हु ॥503॥

- अन्वयार्थः (पडिसमयं) प्रत्येक समय में पूर्व की अपेक्षा (क्रमेण) क्रम से (असंखगुणं दब्बं खु उक्कट्टिदूण) असंख्यातगुणे द्रव्य का अपकर्षण करके (संगहहेट्टापासे) संग्रह-कृष्टि के नीचे और पार्श्वभाग में (हु अपुव्वकिट्टी) निश्चय से अपूर्व-कृष्टियाँ (करेदी) करता है ॥503॥

कृष्टिकरण का द्वितीय समय



कृष्टिकरण के प्रत्येक समय में अनंतगुणी विशुद्धि बढ़ती जाने से पूर्व समय के अपकर्षित द्रव्य से असंख्यात गुणे द्रव्य का अपकर्षण करता है ।


इस द्रव्य का विभाग इन स्थानों में होता है-

1) प्रत्येक संग्रह कृष्टि के नीचे नवीन कृष्टियाँ बनाता है । इन्हें अधस्तन अपूर्व कृष्टि कहते हैं ।

2) पूर्व समयों में की गयी कृष्टियों में भी द्रव्य का विभाग किया जाता है । इसे पार्श्वकृष्टि कहते हैं ।

हेट्टा असंखभागं, पासे वित्थारदो असंखगुणं ।
मज्झिमखंडं उभयं, दब्बविसेसे हवे पासे ॥504॥

- अन्वयार्थः (हेट्टा) संग्रह-कृष्टियों के नीचे की गई कृष्टियाँ (असंखभागं) सर्वकृष्टियों का असंख्यातवाँ भागमात्र हैं और
- (पासे) पार्श्वभाग में की गई कृष्टियों का प्रमाण (वित्थारदो) विस्तार की अपेक्षा से (असंखगुणं) असंख्यातगुणा है।
- (पासे) पार्श्व कृष्टियों में (मज्झिमखंडं) मध्यमखण्ड और (उभयं दब्बविसेसे) उभयद्रव्यविशेष (हवे) है ॥504॥



अपकृष्ट द्रव्य से कृष्टि

प्रत्येक कषाय के पूर्व-अपूर्व स्पर्धकों में से द्रव्य का अपकर्षण करके अपनी-अपनी संग्रह कृष्टियों के नीचे अपूर्व कृष्टि बनाता है ।

जैसे संज्वलन क्रोध के स्पर्धकों से द्रव्य का अपकर्षण करके क्रोध की 3 संग्रह कृष्टियों के नीचे अधस्तन कृष्टि बनाता है ।

अपकर्षित किये द्रव्य का असंख्यातवां भाग अपूर्व अधस्तन कृष्टियों में तथा बहुभाग पूर्वकृष्टि एवं पूर्व-अपूर्व स्पर्धकों में देता है ।

अधस्तन अपूर्वकृष्टियों का प्रमाण $\frac{\text{पूर्व समय में रचित कृष्टि}}{\text{पल्य / असंख्यात}}$ प्रमाण है ।

इसी प्रकार मानादि तीनों में जानना ।

द्वितीयादि समयों में कृष्टियाँ

इस प्रकार बारह संग्रह कृष्टियों के नीचे अपूर्व कृष्टियों की रचना द्वितीयादि समयों में होती है ।

$$\text{द्वितीय समयकृत अपूर्व कृष्टियाँ} = \frac{\text{प्रथम समयकृत कृष्टियाँ}}{\text{ओ } \theta}$$

$$\text{द्वितीय समय में अपकर्षित द्रव्य} = \text{प्रथम समय अपकर्षित द्रव्य} \times \theta$$

पार्श्वभाग की कृष्टियाँ अर्थात् पूर्व समयों में की गयी कृष्टियाँ; अपूर्व कृष्टियों से असंख्यात गुणी है ।

द्वितीय समय में कृष्टि द्रव्य और कृष्टियाँ

	लोभ			माया		
	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
द्रव्य	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ/a}^+$	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ/a}^+$	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ/a}^+$	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ/a}^-$	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ/a}^-$	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ/a}^-$
कृष्टि	$\frac{४}{ख \times 24 \times a}^+$	$\frac{४}{ख \times 24 \times a}^+$	$\frac{४}{ख \times 24 \times a}^+$	$\frac{४}{ख \times 24 \times a}^-$	$\frac{४}{ख \times 24 \times a}^-$	$\frac{४}{ख \times 24 \times a}^-$

	मान			क्रोध		
	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
द्रव्य	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ/a} \equiv$	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ/a} \equiv$	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ/a} \equiv$	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ/a} =$	$\frac{व\ १२+}{24 \times ओ/a} =$	$\frac{व\ १२+ 13}{24 \times ओ/a} =$
कृष्टि प्रमाण	$\frac{४}{ख \times 24 \times a} \equiv$	$\frac{४}{ख \times 24 \times a} \equiv$	$\frac{४}{ख \times 24 \times a} \equiv$	$\frac{४}{ख \times 24 \times a} =$	$\frac{४}{ख \times 24 \times a} =$	$\frac{४ \times 13}{ख \times 24 \times a} =$

द्वितीय समय में पूर्व कृष्टि के नीचे नवीन कृष्टियाँ बनायी जा रही हैं ।

पूर्व गोपुच्छ के साथ इनका द्रव्य गोपुच्छाकार होना चाहिये ।

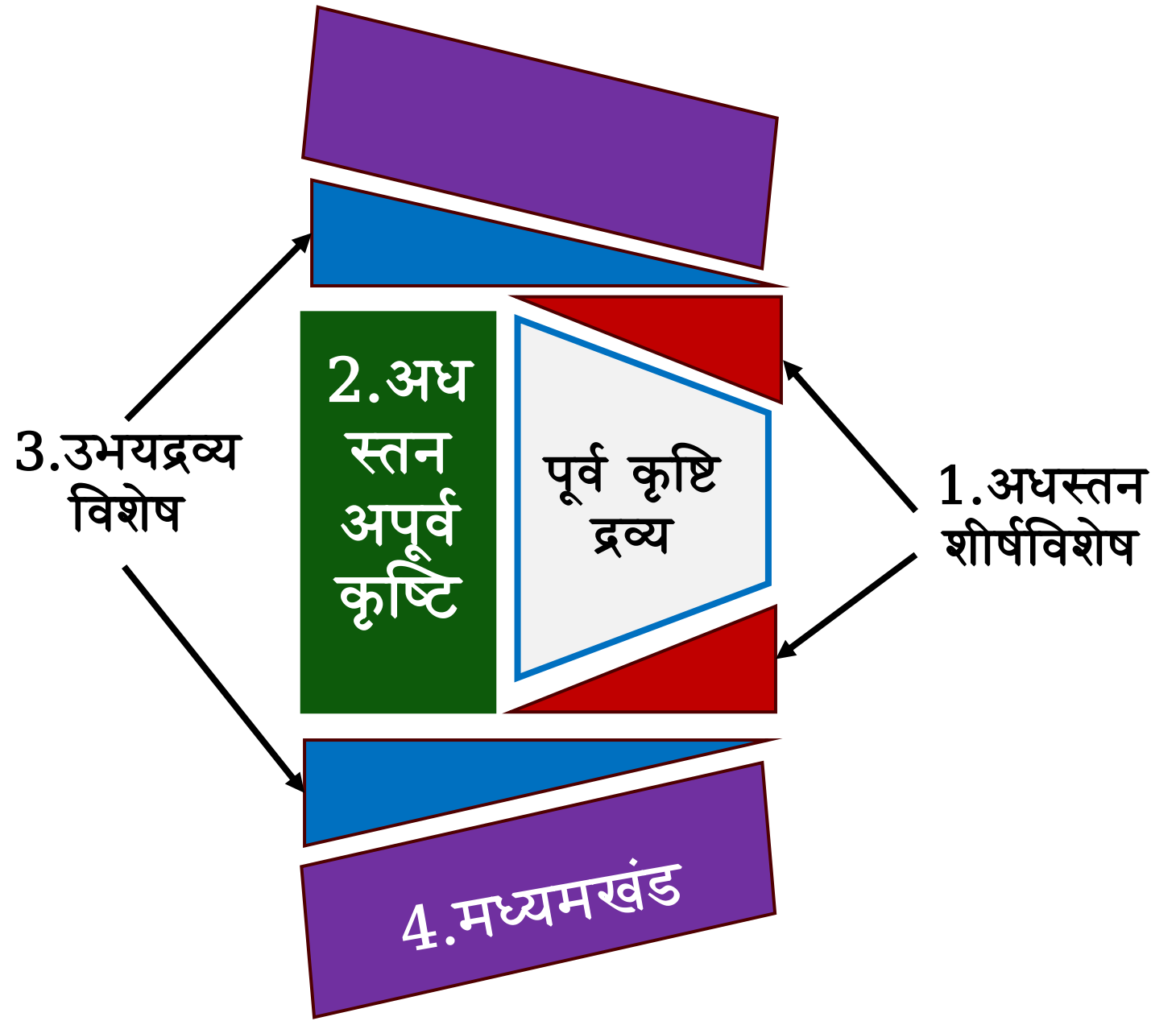
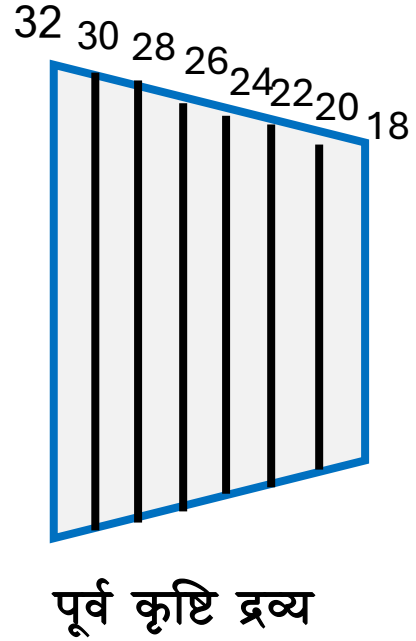
इस गोपुच्छा को बनाने के लिये अपकृष्ट द्रव्य के चार विभाग हैं।

1. अधस्तन
शीर्षविशेष

2. अधस्तन
अपूर्वकृष्टि

3. उभयद्रव्य
विशेष

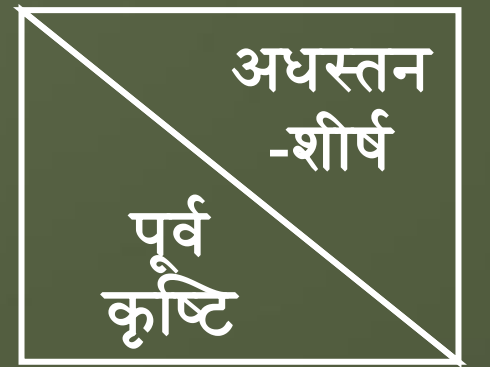
4. मध्यमखंड



पूर्व समय में की गयी कृष्टियों में द्रव्य उत्तरोत्तर एक-एक चय हीन है।

पूर्व-कृष्टियों में जो चय का प्रमाण है उतना द्वितीय कृष्टि में एक चय, तृतीय कृष्टि में दो चय, चौथी कृष्टि में तीन चय — इस प्रकार क्रम से एक-एक बढ़ते चयक्रम से द्वितीयादि कृष्टियों में मिलाने पर सर्व पूर्व कृष्टियाँ प्रथम पूर्व कृष्टि के समान होती हैं।

इस प्रकार सर्व पूर्व कृष्टियाँ; प्रथम पूर्व कृष्टि के समान बनाने के लिए जितना द्रव्य दिया जाता है, उसको अधस्तन-शीर्षविशेष द्रव्य कहते हैं।



पूर्व-कृष्टियों में प्रथम कृष्टि का जितना प्रमाण है उतना ही द्रव्य दूसरे समय में की गई प्रत्येक अपूर्वकृष्टि में समपट्टिकारूप दिया जाता है। इस समपट्टिकारूप द्रव्य को अधस्तन अपूर्वकृष्टिद्रव्य कहते हैं।

यह द्रव्य देने पर अपूर्वकृष्टियाँ प्रथम पूर्वकृष्टि के समान होती हैं।

2) अधस्तन अपूर्वकृष्टि द्रव्य

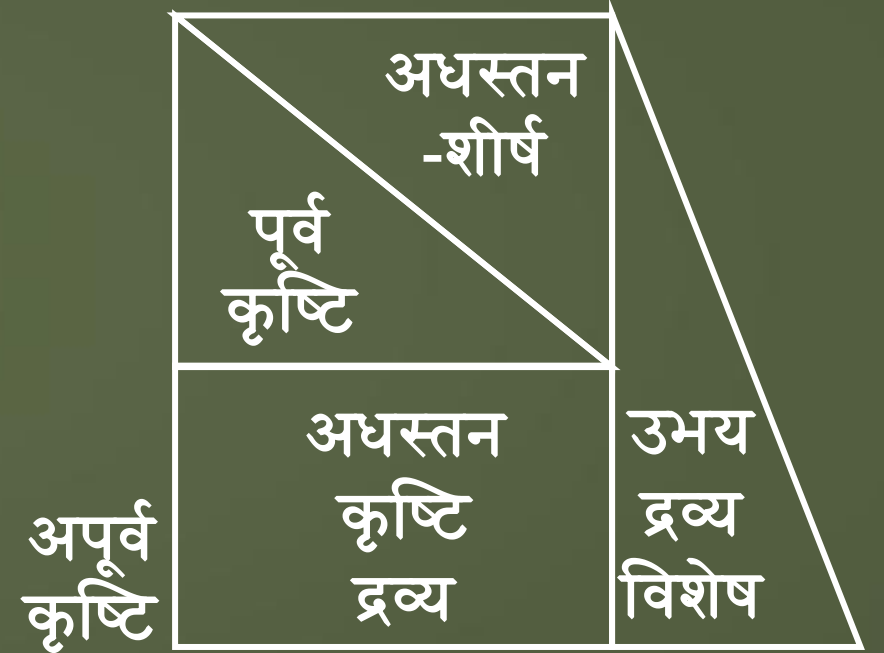
अधस्तन -शीर्ष	
पूर्व कृष्टि	
अधस्तन कृष्टि द्रव्य	384 384 384 384

पूर्व-अपूर्व कृष्टियों में चयहीन क्रमरूप गोपुच्छ करने के लिए उभयकृष्टि संबंधी चय का प्रमाण लाकर अंतिम पूर्वकृष्टि में एक चय; उसके नीचे उपान्त्य कृष्टि में दो चय; इस क्रम से एक-एक चय अधिक-अधिक करते हुए प्रथम अपूर्वकृष्टि तक देना।

इस दिये गए सर्व द्रव्य को उभयद्रव्यविशेष द्रव्य कहते हैं।

यह देने पर पूर्व-अपूर्व कृष्टियाँ एक गोपुच्छाकाररूप होती हैं।

3) उभयद्रव्यविशेष द्रव्य



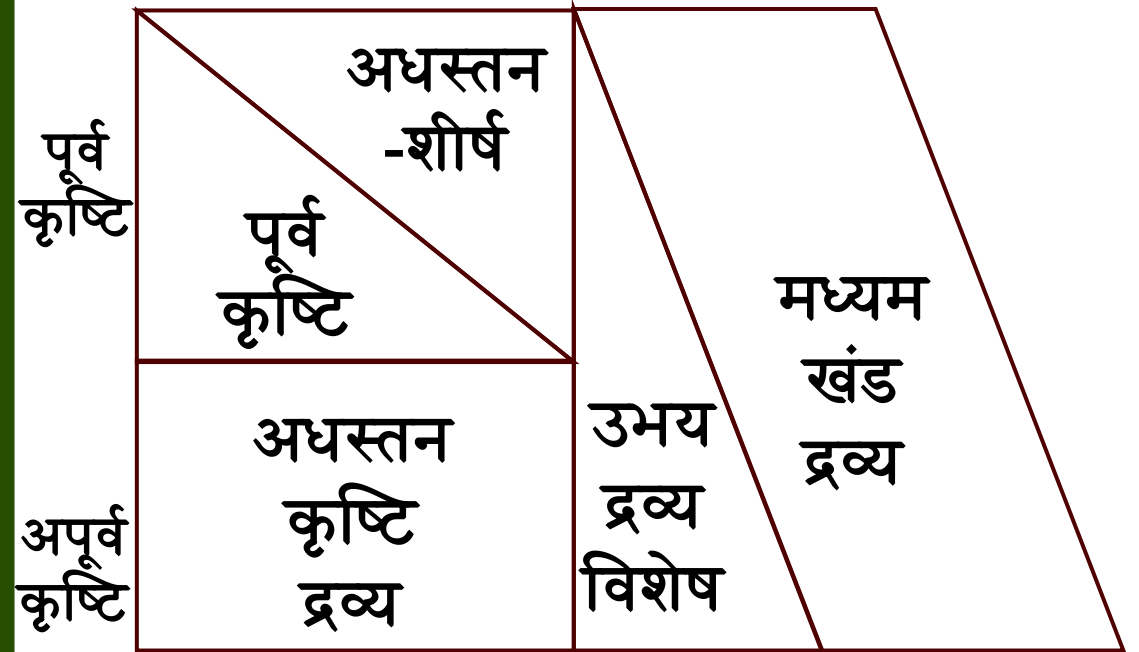
विवक्षित समय में कृष्टि के लिए अपकृष्ट द्रव्य में से अधस्तनशीर्षविशेष द्रव्य, अधस्तन कृष्टि द्रव्य और उभयद्रव्यविशेष द्रव्य घटा करके जो शेष द्रव्य रहा, उसे मध्यमखंड द्रव्य कहते हैं। इसे सर्व पूर्व-अपूर्व कृष्टियों में समान विभाग करके दिया जाता है।

यह द्रव्य देने पर सर्व अपकृष्ट द्रव्य समाप्त होता है और पूर्व-अपूर्व कृष्टियों में चयहीन क्रम से द्रव्य रहता है।

4) मध्यमखंड द्रव्य

अधस्तन -शीर्ष	
पूर्व कृष्टि	मध्यम खंड द्रव्य
अधस्तन कृष्टि द्रव्य	उभय द्रव्य विशेष

चारों द्रव्य निक्षिप्त करने पर गोपुच्छाकार कृष्टियाँ



द्रव्य	कहाँ दिया	कितना दिया ?
अधस्तन-शीर्ष विशेष द्रव्य	पूर्वकृत कृष्टियों में	नीचे से ऊपर तक, 1-1 चय अधिक
अधस्तन कृष्टि द्रव्य	नवीन कृष्टियों में	प्रत्येक कृष्टि में समान
उभय द्रव्य विशेष	पूर्व-अपूर्व कृष्टियों में	ऊपर से नीचे तक, 1-1 चय अधिक
मध्यम खंड द्रव्य	पूर्व-अपूर्व कृष्टियों में	प्रत्येक कृष्टि में समान

सर्व संग्रह कृष्टियों का अधस्तन-शीर्ष द्रव्य

लोभ
की प्रथम
संग्रह
कृष्टि में
अधस्तन-
शीर्ष
विशेष

चूँकि लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि की प्रथम कृष्टि में अधस्तन-शीर्ष नहीं मिलाया है । अतः प्रथम संग्रह में गच्छ का प्रमाण (कुल कृष्टि - 1) रखना चाहिए ।

$$\text{गच्छ} = 3, \text{चय} = 4, \text{आदि} = 4$$

$$[\{ (\text{पद} - 1) / 2 \times \text{चय} \} + \text{आदि}] \times \text{पद}$$

$$[\{ (3 - 1) / 2 \times 4 \} + 4] \times 3$$

$$= [\{ 2/2 \times 4 \} + 4] \times 3$$

$$= [4 + 4] \times 3 = 8 \times 3 = 24$$

अंक-संदृष्टि में लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि का अधस्तन-शीर्षविशेष द्रव्य 24 जानना ।

लोभ की
द्वितीय
संग्रहकृष्टि
में
अधस्तन-
शीर्ष
विशेष

लोभ की द्वितीय संग्रहकृष्टि की प्रथम कृष्टि में अतीत कृष्टि प्रमाण चय हीन हैं । इसलिये वहाँ (पूर्व कृष्टियों का प्रमाण \times चय) प्रमाण द्रव्य दिया जाता है । यही यहाँ आदि का प्रमाण है । $4 \times 4 = 16$

गच्छ = द्वितीय संग्रह कृष्टि की अंतरकृष्टि प्रमाण । 4

चय = पूर्ववत् ही है । क्योंकि नीचे से ऊपर तक सर्व कृष्टियों में चय समान ही है ।



संकलन धन

$$\left\{ \left(\frac{4-1}{2} \times 4 \right) + 16 \right\} \times 4$$

$$= \left\{ \left(\frac{3}{2} \times 4 \right) + 16 \right\} \times 4$$

$$= (6 + 16) \times 4 = 22 \times 4 = 88$$

यह लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि का अधस्तन-शीर्ष विशेष द्रव्य है ।

लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि का
अधस्तन-शीर्ष विशेष द्रव्य

$$\begin{aligned} \text{आदि} &= (\text{पूर्व अतीत कृष्टि} \times \text{चय}) \\ &= 4 \times 2 \times 4 = 32 \end{aligned}$$

$$\begin{aligned} &\left\{ \left(\frac{4-1}{2} \times 4 \right) + 32 \right\} \times 4 \\ &(6 + 32) \times 4 \\ &38 \times 4 = 152 \end{aligned}$$

माया की प्रथम संग्रहकृष्टि का
अधस्तन-शीर्ष विशेष द्रव्य

$$\text{आदि} = 4 \times 3 \times 4 = 48$$

$$\begin{aligned} &\left\{ \left(\frac{4-1}{2} \times 4 \right) + 48 \right\} \times 4 \\ &(6 + 48) \times 4 \\ &54 \times 4 = 216 \end{aligned}$$

इसी प्रकार शेष कृष्टियों का अधस्तन-शीर्षविशेष द्रव्य निकालना चाहिए ।

क्रोध की तृतीय संग्रह का शीर्ष द्रव्य

$$\text{आदि} = \text{पूर्व } 11 \text{ संग्रह कृष्टि} \times \text{चय} = 4 \times 11 \times 4 = 176$$

$$\left\{ \left(\frac{4-1}{2} \times 4 \right) + 176 \right\} \times 4 = (6 + 176) \times 4 = 182 \times 4 = 728$$

नोट: यहाँ अंक संदृष्टि में क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि में भी 4 ही कृष्टि रखी है। वास्तविक गणित में अंतिम संग्रह कृष्टि में संख्यात गुणी कृष्टि होती है। क्योंकि नोकषाय का द्रव्य यहाँ ही प्राप्त हुआ है।

अर्थ संदृष्टि

लोभ की
प्रथम संग्रह
कृष्टि का
अधस्तन-
शीर्ष द्रव्य

चय की संदृष्टि = वि ।

$$\text{गच्छ} = (\text{लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि} - 1) = \frac{8}{\sqrt{24}} - 1$$

प्रथम संग्रह में चय ही आदि का प्रमाण है । अतः आदि = वि

$$\left\{ \left(\frac{8}{\sqrt{24}} - 1 - 1 \right) \times \text{वि} \right\} + \text{वि} \times \left(\frac{8}{\sqrt{24}} - 1 \right)$$

$$\left(\frac{8}{\sqrt{24}} - 2 \right) \times \text{वि} + \text{वि} \times \left(\frac{8}{\sqrt{24}} - 1 \right)$$

$$\text{वि} \times \left(\frac{8}{\sqrt{24 \times 2}} - \frac{2}{2} + 1 \right) \times \left(\frac{8}{\sqrt{24}} - 1 \right)$$

$$\text{वि} \times \left(\frac{8}{\sqrt{24 \times 2}} \right) \times \left(\frac{8}{\sqrt{24}} - 1 \right)$$

लोभ की
द्वितीय
संग्रह
कृष्टि का
अधस्तन-
शीर्ष द्रव्य

$$\text{आदि} = \frac{४}{\text{ख}_{24}} \times \text{वि}$$

$$\left\{ \left(\frac{\frac{४}{\text{ख}_{24}} - 1}{2} \times \text{वि} \right) + \frac{४}{\text{ख}_{24}} \times \text{वि} \right\} \times \frac{४}{\text{ख}_{24}}$$

$$\left\{ \left(\left(\frac{४}{\text{ख}_{24 \times 2}} - \frac{1}{2} \right) \times \text{वि} \right) + \frac{४}{\text{ख}_{24}} \times \text{वि} \right\} \times \frac{४}{\text{ख}_{24}}$$

$$\text{वि} \times \left(\frac{४}{\text{ख}_{24 \times 2}} - \frac{1}{2} + \frac{४}{\text{ख}_{24}} \right) \times \frac{४}{\text{ख}_{24}}$$

$$\text{वि} \times \left(\frac{४ | 3}{\text{ख} \times 24 \times 2} - \frac{1}{2} \right) \times \frac{४}{\text{ख}_{24}}$$

$$\left(\frac{४ | 3}{\text{ख} \times 24 \times 2} - \frac{1}{2} \right) \times \frac{४}{\text{ख}_{24}} \times \text{वि}$$


शेष संग्रह
कृष्टियों
का
अधस्तन-
शीर्ष द्रव्य

इसी तरह तृतीय संग्रह कृष्टि में $\frac{3}{2}$ के स्थान पर $\frac{5}{2}$ गुणकार आता है। ऐसे क्रम से $\frac{7}{2}, \frac{9}{2}$ आदि गुणकार होते हैं।

अंतिम कृष्टि में गच्छ का प्रमाण 13 गुणा होने से गुणकार अधिक आता है।

अंतिम संग्रह कृष्टि में अधस्तन शीर्ष द्रव्य =

$$\frac{8}{ख 24} \times \frac{455}{2} \times \frac{8}{ख 24} \times वि$$



अधस्तन कृष्टि द्रव्य

प्रथम समय में लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि में जो द्रव्य का प्रमाण है, उतना प्रत्येक संग्रह कृष्टि के नीचे प्रत्येक नवीन कृष्टि को दिया जाता है ।

अतः इस जघन्य कृष्टि के द्रव्य को अपनी-अपनी नवीन अपूर्व कृष्टियों की संख्या से गुणा करने पर अपना-अपना अधस्तन कृष्टि द्रव्य आता है ।

अंक संदृष्टि

मानाकि

- नवीन कृष्टि = 2,
- लोभ की जघन्य कृष्टि का द्रव्य = 384

एक-एक संग्रह कृष्टि का द्रव्य

$$= 2 \times 384 = 768$$

कुल नवीन कृष्टियाँ

$$= 12 \times 2 = 24$$

अतः कुल अधस्तन कृष्टि द्रव्य

$$= 384 \times 24 = 9216$$

अर्थ संदृष्टि

जघन्य कृष्टि द्रव्य

$$\bullet \frac{\text{व } १२+}{\text{ओ } ४ \text{ ख } 24}$$

नवीन कृष्टियों का प्रमाण

$$\bullet = \frac{४}{\text{ख } 24 \mid \text{ओ } ०}$$

अतः सर्व अधस्तन कृष्टि द्रव्य

$$\bullet = \frac{\text{व } १२+}{\text{ओ } ४ \text{ ख } 24} \times \frac{४}{\text{ख } 24 \mid \text{ओ } ०}$$

उभय द्रव्य विशेष

मध्यमधन

$$\bullet \frac{\text{सर्व द्रव्य}}{\text{गच्छ}} = \frac{109,368}{72} = 1519$$

क्रोध की तृतीय संग्रहकृष्टि की अंतिम कृष्टि में एक उभय द्रव्य विशेष मिलता है। द्विचरम में दो, त्रिचरम में तीन – ऐसे क्रम से बढ़ते हुए लोभ की प्रथम कृष्टि की प्रथम अपूर्व कृष्टि तक उभय द्रव्य विशेष देना चाहिए।

अंक संदृष्टि

$$\begin{aligned} \text{गच्छ} &= \text{क्रोध की तृतीय संग्रह की पूर्व कृष्टि} + \\ &\text{अपूर्वकृष्टि} \\ &= 4 + 2 = 6 \end{aligned}$$

$$\text{आदि} = 1 \text{ चय}$$

संकलन धन

$$\begin{aligned} &= \left\{ \left(\frac{6-1}{2} \times 14 \right) + 14 \right\} \times 6 \\ &= \{ (5 \times 7) + 14 \} \times 6 \\ &= 49 \times 6 = 294 \end{aligned}$$

अर्थ संदृष्टि:

$$\text{गच्छ} = \frac{8 \mid 13}{\text{ख} 24} +$$

(क्रोध की तृतीय संग्रहकृष्टि की पूर्व एवं अपूर्व कृष्टियों का प्रमाण + 1) × चय = यहाँ आदि का प्रमाण है ।

क्योंकि यहाँ द्वितीय संग्रह की अंतिम कृष्टि में बीते गये आयाम से एक अधिक करके चय दिये जाते हैं ।

अर्थ
संदष्टिः
क्रोध की
द्वितीय
संग्रह
कृष्टि का
उभयद्रव्य
विशेष
द्रव्य

$$\text{गच्छ} = \frac{४}{ख 24} + ; \text{आदि} = \frac{४ \times 13}{ख 24} + \times \text{वि}$$

$$\left\{ \left(\frac{४+}{ख 24} - 1 \right) \times \text{वि} \right\} + \frac{४ \times 13+}{ख 24} \times \text{वि} \times \frac{४}{ख 24} +$$

$$\left(\frac{४ \times \text{वि}}{ख 24 \times 2} + \frac{४ | 13 \times \text{वि} \times 2}{ख 24 \times 2} \right) \times \frac{४}{ख 24} +$$

(ऋण और अधिक को गौण करके)

$$\frac{४ \times \text{वि} \times 27}{ख 24 \times 2} \times \frac{४}{ख 24} +$$

कुल उभय द्रव्य विशेष द्रव्य

मध्यमखंड

सर्व मध्यमखंड द्रव्य

= द्वितीय समय में अपकृष्ट द्रव्य
– पूर्वोक्त 3 द्रव्य

95448 – (4512 + 9216 +
36792)

= 95448 – 50520

= 44928

इस मध्यमखंड द्रव्य को समानरूप से सारी
नयी, पुरानी कृष्टियों में दिया जाता है ।
वह एक मध्यमखंड द्रव्य कहलाता है ।

एक मध्यमखंड द्रव्य =
सर्व मध्यमखंड द्रव्य
पूर्व-अपूर्व कृष्टि संख्या

= $\frac{44928}{72} = 624$

मध्यम खंड - अर्थ संदृष्टि

$$\text{द्वितीय समय में अपकृष्ट द्रव्य} = \frac{व१२+}{\frac{ओ}{०}}$$

इसमें से पूर्वोक्त तीन द्रव्य कम करने के लिये भागहार के भागहार में तीन कम की संदृष्टि '≡' करी ।

$$\text{मध्यमखंड द्रव्य} = \frac{व१२+}{\frac{ओ}{०\equiv}}$$

$$\text{सर्व कृष्टियों की संख्या } \left(\frac{०}{ख} +\right) \text{ से भाग देने पर एक मध्यमखंड} = \frac{व१२+}{\frac{ओ}{०\equiv} \mid \frac{४+}{ख}}$$

इतना एक मध्यमखंड द्रव्य प्रत्येक कृष्टि को दिया जाता है ।



अपकृष्ट द्रव्य विभाग - उपसंहार


इस प्रकार द्वितीय समय में अपकर्षण किये हुए कृष्टि संबंधी द्रव्य में चार प्रकार के द्रव्य का विभाग कहा है ।

वास्तव में उस-उस कृष्टिरूप सर्वद्रव्य एक साथ एक समय में ही परिणत हुआ है । परंतु कौन-सी कृष्टि में कितना द्रव्य परिणत हुआ है – इसका ज्ञान कराने के लिए द्रव्य में चार प्रकार का विभाग कहा है ।

इस प्रकार द्रव्य देने से सर्व कृष्टियों में एक गोपुच्छ बना रहता है ।

पुष्वादिमिह अपुष्वा, पुष्वादि अपुष्वापढमगे सेसे ।
दिज्जदि असंखभागेणुणं अहियं अणंतभागुणं ॥505॥

- अन्वयार्थः (अपुष्वा) अपूर्व-कृष्टि की अंतिम कृष्टि से (पुष्वादिमिह) पूर्वकृष्टि की आदि कृष्टि में (असंखभागेणुणं) असंख्यातवाँ भाग हीन द्रव्य (दिज्जदि) दिया जाता है और
- (पुष्वादि) पूर्वकृष्टि की अंत कृष्टि से (अपुष्वापढमगे) अपूर्व कृष्टि की प्रथम कृष्टि में (असंखभागेण अहियं) असंख्यातवाँ भाग अधिक द्रव्य दिया जाता है और
- (सेसे) शेष कृष्टियों में (अणंतभागुणं) अनन्तवाँ भाग हीन द्रव्य (दिज्जदि) दिया जाता है ॥505॥



द्रव्य देने का क्रम

अपूर्व कृष्टि की अंतिम कृष्टि से पूर्व कृष्टि की आदि कृष्टि में असंख्यातवां भाग हीन द्रव्य दिया जाता है ।

पूर्वकृष्टि की अंतिम कृष्टि से अपूर्व की आदि कृष्टि में असंख्यातवां भाग अधिक द्रव्य दिया जाता है ।

शेष प्रत्येक कृष्टि में पूर्व से अनंतवां भाग हीन द्रव्य दिया जाता है ।

अपूर्व कृष्टियों में देय द्रव्य

लोभ की प्रथम संग्रह की प्रथम अपूर्व कृष्टि में एक अधस्तन कृष्टि द्रव्य, पूर्व-अपूर्व कृष्टि के आयाम प्रमाण चय, एक मध्यमखंड दिया जाता है ।

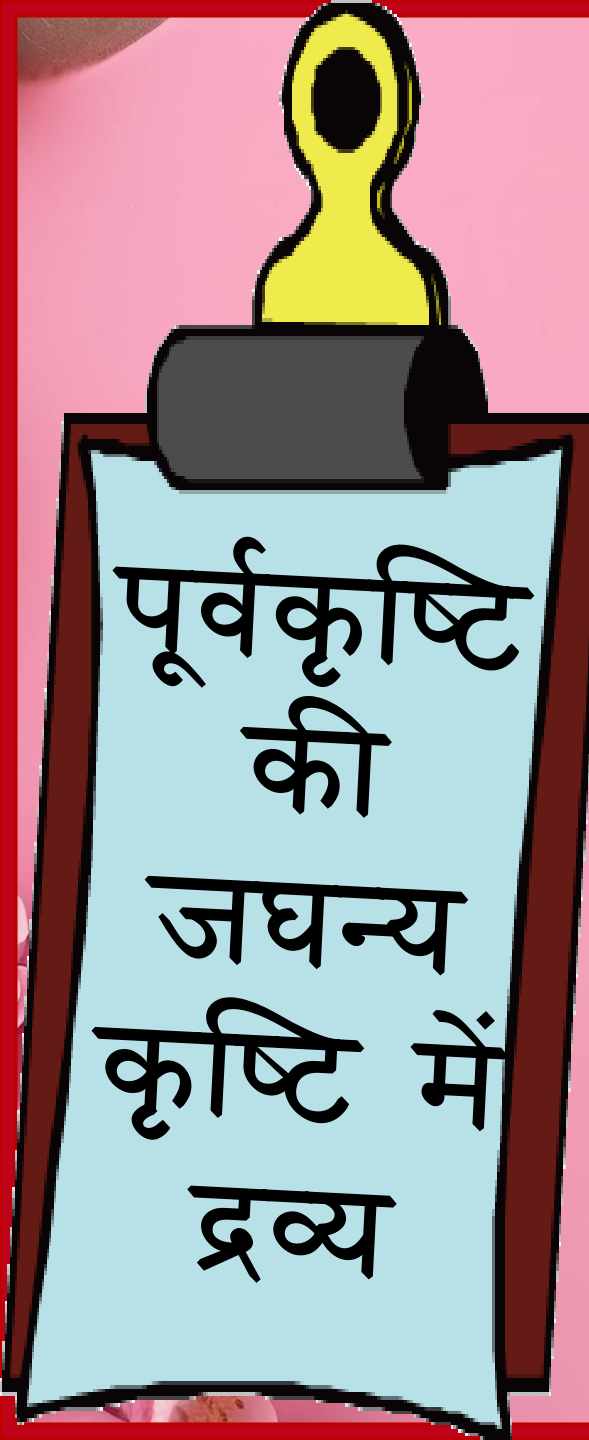
द्वितीय अपूर्व कृष्टि में पूर्ववत् एक अधस्तन कृष्टि द्रव्य, (पूर्व-अपूर्वकृष्टि-1) प्रमाण चय, एक मध्यम खंड दिया जाता है । अर्थात् मात्र एक चयहीन द्रव्य यहाँ दिया गया है ।

अतः प्रथम कृष्टि के द्रव्य से द्वितीय कृष्टि का द्रव्य कुछ हीन (एक चयहीन) ही है ।

इसी प्रकार चरम अपूर्व कृष्टि तक एक-एक चयहीन करते हुये तीन द्रव्य दिये जाते हैं ।

अंतिम अपूर्व कृष्टि में कितने चय दिये जाते हैं – पूर्व-अपूर्व कृष्टि आयाम – (अपूर्व कृष्टि आयाम – 1)

अर्थात् (पूर्वकृष्टि आयाम + 1) प्रमाण चय अंतिम अपूर्वकृष्टि को दिये जाते हैं ।



पूर्वकृष्टि की जघन्य कृष्टि में द्रव्य

अंतिम अपूर्व कृष्टि के ऊपर लोभ की प्रथम संग्रह की पूर्वकृष्टि की जघन्य कृष्टि है। इसमें एक मध्यमखंड द्रव्य, (सर्व कृष्टि – व्यतीत हुई कृष्टि) प्रमाण उभय द्रव्य विशेष चय दिये जाते हैं।

यह देय द्रव्य; पूर्व देय द्रव्य से एक उभयद्रव्यविशेष तथा एक अधस्तन कृष्टि द्रव्य से हीन है।

एक अधस्तन कृष्टि द्रव्य; इसके पूर्व की अंतिम कृष्टि में दिये गए द्रव्य का असंख्यातवां भाग है। तथा एक उभयद्रव्य विशेष उसी द्रव्य का अनंतवां भाग है।

अतः इस पूर्व कृष्टि में असंख्यातवां भाग हीन द्रव्य मिला है — यह कथन युक्तिसंगत है।

पूर्व कृष्टि की द्वितीय आदि कृष्टि में द्रव्य

पूर्व कृष्टि की द्वितीय कृष्टि में एक मध्यमखंड द्रव्य, (सर्व कृष्टि - व्यतीत हुई पूर्व-अपूर्व कृष्टि) प्रमाण उभयद्रव्यविशेष और एक अधस्तन-शीर्ष विशेष द्रव्य दिये जाते हैं।

यहाँ एक अधस्तन-शीर्ष विशेष द्रव्य अधिक हुआ एवं एक उभयद्रव्य विशेष कम हुआ। उभयद्रव्यविशेष में से अधस्तन-शीर्ष विशेष घटाने पर जो द्रव्य शेष रहता है, उतना पूर्व कृष्टि से द्वितीय कृष्टि में द्रव्य कम प्राप्त हुआ।

यह द्रव्य प्रथम कृष्टि में दिये द्रव्य का अनंतवां भाग है। अतः प्रथम से द्वितीय कृष्टि में अनंतवां भाग हीन द्रव्य दिया जाता है।

इसी प्रकार तृतीयादि कृष्टि से अंतिम कृष्टि तक एक-एक चयहीन अर्थात् अनंतवां भाग हीन द्रव्य दिया जाता है।

लोभ की द्वितीय संग्रह की अपूर्व कृष्टियों में द्रव्य

इसके ऊपर लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि की अपूर्व कृष्टियाँ हैं । इसकी प्रथम अपूर्व कृष्टि में एक अधस्तन कृष्टि द्रव्य, एक मध्यमखंड द्रव्य, (सर्व कृष्टि – व्यतीत हुई पूर्व-अपूर्व कृष्टि) प्रमाण उभयद्रव्य विशेष द्रव्य दिये जाते हैं ।

लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि की अंतिम कृष्टि में दिये द्रव्य से यह द्रव्य असंख्यातवां भाग अधिक है । क्योंकि अधस्तन कृष्टि द्रव्य; पूर्व कृष्टि में दिये द्रव्य का असंख्यातवां भाग है । यद्यपि एक उभयद्रव्यविशेष एवं अधस्तन-शीर्ष विशेष द्रव्य यहाँ पर कम दिया है, पर कम दिये गए द्रव्य से अधिक दिया गया द्रव्य अधिक है ।

इसी प्रकार आगे भी पूर्व कृष्टि की अंतिम कृष्टि से अपूर्व कृष्टि की प्रथम कृष्टि में असंख्यातवां भाग अधिक द्रव्य दिया जाता है ।

इससे द्वितीय अपूर्व कृष्टि में एक उभयद्रव्यविशेष हीन है । अतः अनंतवां भाग हीन द्रव्य दिया जाता है – ऐसा कहा है ।

इस प्रकार द्वितीय संग्रह की सारी अपूर्व कृष्टियों में अनंतवां भागहीन अर्थात् एक-एक उभयद्रव्यविशेष द्रव्य कम-कम द्रव्य देना चाहिए ।

लोभ की द्वितीय संग्रह की पूर्व कृष्टियों में द्रव्य

द्वितीय संग्रह की अपूर्व कृष्टियों के ऊपर द्वितीय संग्रह की प्रथम पूर्व कृष्टि है। इसमें एक मध्यमखंड द्रव्य, (सर्व कृष्टि – व्यतीत हुई पूर्व-अपूर्व कृष्टि) प्रमाण उभद्रव्यविशेषद्रव्य, प्रथम संग्रह कृष्टि प्रमाण अधस्तनशीर्ष विशेष द्रव्य दिया जाता है।

एक अधस्तन कृष्टि द्रव्य – अधस्तन-शीर्ष द्रव्य + 1 उभयद्रव्यविशेष द्रव्य = हीन द्रव्य का प्रमाण होता है। यह द्रव्य अंतिम अपूर्व कृष्टि में दिये द्रव्य का असंख्यातवां भाग है। इसलिए असंख्यातवां भाग हीन द्रव्य दिया – ऐसा कहा है।

इसके ऊपर द्वितीय से अंतिम कृष्टि तक एक-एक अधस्तन-शीर्ष बढ़ता हुआ और एक-एक उभयद्रव्यविशेष घटता हुआ दिया जाता है। यह अनंतवां भाग हीन-हीन द्रव्य दिया गया।

इस प्रकार आगे सर्वत्र अपूर्व-पूर्व कृष्टियों में द्रव्य का विभाग जानना।

कृष्टियों में द्रव्य विभाग

ऊपर सभी पूर्व कृष्टियों में जितनी पूर्व कृष्टियाँ व्यतीत हुई, उतने अधस्तन-शीर्ष द्रव्य देना ।

सभी अपूर्व-पूर्व कृष्टियों में (सर्व कृष्टि – व्यतीत हुई पूर्व-अपूर्व कृष्टियाँ) प्रमाण उभयद्रव्यविशेष द्रव्य देना ।

सभी अपूर्व-पूर्व कृष्टियों में एक-एक मध्यमखंड देना ।

सभी अपूर्व कृष्टियों में एक अधस्तन कृष्टि द्रव्य देना ।

यह कृष्टि द्रव्य के विभाग का विधान कहा ।

अपने-अपने पूर्व-अपूर्व स्पर्धकों में देय द्रव्य है, उसे साधिक डेढ़गुणहानि से भाजित करने पर प्रथम अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा में देता है ।
आगे चयहीन क्रम से प्रत्येक वर्गणा में देता है ।

वारेक्कारमणंतं, पुव्वादि अपुव्वआदि सेसं तु ।
तेवीस ऊंटकूडा, दिज्जे दिस्से अणंतभागूणं ॥506॥

- अन्वयार्थः (पुव्वादि) पूर्व कृष्टियों की आदि कृष्टि (वार) बारह (अपुव्वआदि) अपूर्व-कृष्टियों की आदिकृष्टि (एक्कारं) ग्यारह (तु) और (सेसं) शेष कृष्टियाँ (अणंतं) अनन्त हैं।
- इस प्रकार (दिज्जे) देय द्रव्य में (तेवीस ऊंटकूडा) 23 स्थानों में उष्ट्रकूट रचना होती है।
- (दिस्से) दृश्यमान द्रव्य में (अणंतभागूणं) लोभ की प्रथम कृष्टि से लेकर क्रोध की अंतिम कृष्टि तक अनन्तवाँ भाग हीनक्रम है ॥506॥

23 ऊष्ट्रकूट रचना

इस प्रकार दीयमान द्रव्य 12 कृष्टिस्थानों में असंख्यात भाग से हीन है, क्योंकि 12 संग्रह कृष्टियों के नीचे अपूर्व कृष्टियों की रचना हुई है ।

11 स्थान असंख्यात भाग अधिक स्थान हैं । क्योंकि पूर्व से अपूर्व कृष्टि के संधि स्थान 11 ही हैं । प्रथम अपूर्व कृष्टि के नीचे कोई पूर्व कृष्टि नहीं है ।

शेष कृष्टि स्थानों में दीयमान द्रव्य अनंतवें भाग हीन है ।

इस प्रकार दीयमान द्रव्य की 23 स्थानों पर ऊष्ट्रकूट रचना होती है ।

जिस प्रकार ऊंट की पीठ पीछे के भाग में पहले ऊँची होती है, बीच में नीची होती है, पुनः आगे ऊँची-नीची होती है; उसी प्रकार यहाँ दीयमान द्रव्य प्रथम कृष्टि में अधिक होकर पश्चात् हीन होता है । पुनः संधि-स्थानों में असंख्यात भाग हीन, अधिक होता जाता है । इसलिये यहाँ द्रव्य श्रेणी की रचना को ऊष्ट्रकूट रचना कहा है ।

द्वितीय समय में दृश्यमान द्रव्य

द्वितीय समय में दृश्यमान द्रव्य की अपेक्षा तो गोपुच्छकार ही रचना है । क्योंकि लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि की प्रथम अपूर्व कृष्टि में सर्वाधिक द्रव्य है । उसके पश्चात् क्रोध की अंतिम कृष्टि तक एक-एक चय घटते क्रम में द्रव्य अवस्थित है ।

अपूर्व कृष्टियों में तो दीयमान द्रव्य ही दृश्यमान द्रव्य है । पूर्व कृष्टियों में पूर्व समय में दिया द्रव्य एवं विवक्षित समय में दिया द्रव्य मिलकर दृश्यमान द्रव्य होता है ।

अपूर्व कृष्टियों में अधस्तन कृष्टि द्रव्य देने से और पूर्व कृष्टियों में अधस्तन-शीर्ष द्रव्य देने से दोनों का प्रमाण समान हो जाता है । पुनः मध्यमखंड देने से भी दोनों का प्रमाण समान रहता है । उभयद्रव्य विशेषद्रव्य नीचे से ऊपर तक एक-एक चयहीन क्रम से देने पर पूरा गोपुच्छकार हो जाता है ।

चूंकि एक गोपुच्छ का प्रमाण एक कृष्टि का अनंतवां भाग है । इसलिए सर्व द्रव्य अनंत भागहीन क्रम से दिखाई देता है ।

अपूर्व-पूर्व स्पर्धकों में द्रव्य

अंतिम कृष्टि से प्रथम अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा में दीयमान द्रव्य अनंतगुणा हीन है क्योंकि अपकृष्ट द्रव्य का एकभाग मात्र स्पर्धकों में दिया जाता है तथा यह एक भाग भी अनंत गुणहानियों में दिया जाता है ।

इसके आगे चयहीन क्रम से द्रव्य दिया जाता है ।

यहाँ स्पर्धकों का गोपुच्छ कृष्टियों के गोपुच्छ से भिन्न होता है ।

जिस प्रकार यह द्वितीय समय की प्ररूपणा करी, वैसी ही तृतीयादि समय से कृष्टिकरण के अंतिम तक के अपकृष्ट द्रव्य, दृश्यमान, दीयमान द्रव्य की प्ररूपणा जानना ।

परंतु प्रत्येक समय असंख्यात गुणा द्रव्य अपकर्षित करता है एवं नवीन अपूर्व कृष्टियाँ असंख्यात गुणा हीन बनाता है ।

किट्टीकरणद्धाए, चरिमे अंतोमुहुत्तसंजुत्तो ।
चत्तारि होति मासा, संजलणाणं तु ठिदिबंधो ॥507॥

- अन्वयार्थः (किट्टीकरणद्धाए) कृष्टिकरणकाल के (चरिमे) अंतिम समय में (अंतोमुहुत्त संजुत्तो) अन्तर्मुहूर्त अधिक (चत्तारि मासा) चार मास (संजलणाणं तु ठिदिबंधो) संज्वलन कषाय का स्थिति-बंध (होति) होता है ॥507॥

सेसाणं वस्साणं, संखेज्जसहस्सगाणि ठिदिबंधो ।
मोहस्स य ठिदिसंतं, अडवस्संतोमुहुत्तहियं ॥508॥

- अन्वयार्थः (सेसाणं ठिदिबंधो) मोहनीय छोड़कर शेष कर्मों का स्थिति-बंध (वस्साणं संखेज्जसहस्साणि) संख्यात हजार वर्षप्रमाण होता है (य) और
- (मोहस्स ठिदिसंतं) मोहनीय का स्थिति-सत्त्व (अडवस्संतोमुहुत्तहियं) अंतर्मुहूर्त अधिक आठ वर्ष प्रमाण रहता है ॥508॥

घादितियाणं संखं, वस्ससहस्साणि होदि ठिदिसंतं ।
वस्साणमसंखेज्जसहस्साणि अघादितिण्णं तु ॥509॥

- अन्वयार्थः (घादितियाणं ठिदिसंतं) तीन घातिकर्मों का स्थिति-सत्त्व (संखं वस्स सहस्साणि) संख्यात हजार वर्ष (होदि) है।
- (अघादितिण्णं तु) परन्तु तीन अघाति कर्मों का स्थिति-सत्त्व (वस्साणमसंखेज्जसहस्साणि) असंख्यात हजार वर्ष (होंति) है
॥509॥

कृष्टिकरण काल के अंत में स्थिति-बंध, सत्त्व

कर्म	स्थिति-बंध	स्थिति-सत्त्व
मोहनीय	4 मास	8 वर्ष + अंतर्मुहूर्त
3 घाति	संख्यात हजार वर्ष	संख्यात हजार वर्ष
3 अघाति	संख्यात हजार वर्ष	असंख्यात हजार वर्ष

मोहनीय का बंध प्रत्येक अंतर्मुहूर्त में अंतर्मुहूर्त प्रमाण घट रहा है ।

मोहनीय का सत्त्व प्रत्येक अंतर्मुहूर्त में संख्यात बहुभाग घट-घटकर अब अंतर्मुहूर्त मात्र घटता है ।

शेष कर्मों का बंध प्रत्येक अंतर्मुहूर्त में संख्यात बहुभाग प्रमाण घट रहा है ।

3 घाति का सत्त्व प्रत्येक अंतर्मुहूर्त में संख्यात बहुभाग घट-घटकर अभी भी संख्यात हजार वर्ष है, परंतु पूर्व से संख्यात गुणाहीन है ।

3 अघाति का सत्त्व प्रत्येक अंतर्मुहूर्त में असंख्यात बहुभाग घट-घटकर अभी भी असंख्यात हजार वर्ष है, परंतु पूर्व से असंख्यात गुणाहीन है ।

पडिपदमणंतगुणिदा, किट्टीयो फड्डया विसेसहिया ।
किट्टीण फड्डयाणं, लक्खणमणुभागमासेज्ज ॥510॥

- अन्वयार्थः (किट्टीयो) सर्वकृष्टियाँ (पडिपदमणंतगुणिदा) प्रत्येक पद में अनन्तगुणित हैं और (फड्डया) स्पर्धक प्रत्येक पद में (विसेसहिया) विशेष अधिक हैं।
- इस प्रकार (अणुभागमासेज्ज) अनुभाग का आश्रय करके (किट्टीण) कृष्टियों और (फड्डयाणं) स्पर्धकों का (लक्खणं) लक्षण कहा गया है ॥510॥

कृष्टि और स्पर्धक में अंतर

कृष्टियों में एक कृष्टि से अगली कृष्टि अनंतगुणित होती है ।

परंतु स्पर्धकों में एक वर्गणा से दूसरी वर्गणा विशेष अधिक शक्तिवान् ही होती है, अनंत गुणित नहीं।

यह अनंत गुणा का क्रम जघन्य कृष्टि से उत्कृष्ट कृष्टि तक रहता है ।

जघन्य स्पर्धक से लेकर उत्कृष्ट स्पर्धक तक वे शक्ति में क्रम से विशेष अधिक ही होते हैं; अनंत गुणित नहीं ।

प्रश्न –
प्रथम स्पर्धक
से अनंत
गुणा स्पर्धक
भी तो होता
है ?

उत्तर – प्रथम स्पर्धक से अनंत गुणा स्पर्धक
अनंत स्पर्धकों के बाद आता है ।

यहाँ एक स्पर्धक से अनंतर स्पर्धक एवं उनकी
वर्गणाओं की तुलना की जा रही है ।

इसलिए किसी भी स्पर्धक के अनंतर अनंत गुणा
स्पर्धक नहीं पाया जाता; परंतु कृष्टि के अनंतर
कृष्टि अनंत गुणा ही होती है ।

पुव्वापुव्वफड्डयमणुहवदि हु किट्टिकारओ णियमा ।
तस्सद्धा णिट्ठायदि, पढमट्ठिदि आवली सेसे ॥511॥

- अन्वयार्थः (किट्टिकारओ हु) कृष्टिकारक (णियमा) नियम से (पुव्वापुव्वफड्डयमणुहवदि) पूर्व और अपूर्व स्पर्धकों का अनुभव करता है।
- (पढमट्ठिदि आवली सेसे) प्रथम स्थिति में एक आवली शेष रहने पर (तस्सद्धा) कृष्टिकरण का काल (णिट्ठायदि) समाप्त करता है ॥511॥

कृष्टि करण काल की समाप्ति

कृष्टिकारक जीव पूर्व-अपूर्व स्पर्धकों का ही वेदन करता है, कृष्टियों का नहीं ।

संपूर्ण कृष्टिकरणकाल में प्रत्येक समय पूर्व में कहे अनुसार कृष्टियों की रचना होती है ।

संज्वलन क्रोध की प्रथम स्थिति में एक उच्छिष्टावली शेष रहने पर कृष्टिकरण पूर्ण होता है ।

कृष्टिकरण के अंतिम समय में सर्व स्पर्धकों का द्रव्य कृष्टिरूप परिणमाया जाता है ।

इसके पश्चात् अगले समय से कृष्टिवेदक काल प्रारंभ होता है ।

से काले किट्टीओ, अणुहवदि हु चारिमासमडवस्सं ।
बंधो संतं मोहे, पुव्वालावं तुं सेसाणं ॥512॥

- अन्वयार्थः (से काले) अनन्तर काल में अर्थात् कृष्टिवेदन काल में (किट्टीओ) कृष्टियों का (अणुहवदि) अनुभव करता है।
- उस समय में (मोहे बंधो चारिमासं) मोह का स्थिति-बंध चार मास और (संतं) उसका स्थिति-सत्त्व (अडवस्सं) आठ वर्ष है।
- (तु) और (सेसाणं) शेष कर्मों का स्थिति-बन्ध और स्थिति-सत्त्व (पुव्वालावं) पूर्व में कहे गये आलाप के समान है ॥512॥

कृष्टिवेदक का प्रथम बंध, सत्त्व

वेदन

- अनंतर समय में कृष्टियों का अपकर्षण करके प्रथम स्थिति बनाता है। वहाँ उदयावली के निषेकों में द्रव्य का अपकर्षण करके उदय को भोगता है। उस भोगने का नाम ही वेदन है।

उदय

- तब ही उच्छिष्टावली के स्पर्धकरूप निषेक एक-एक समय में स्तिबुक संक्रमण के द्वारा कृष्टिरूप होकर उदय में आते हैं।

स्थिति-बंध

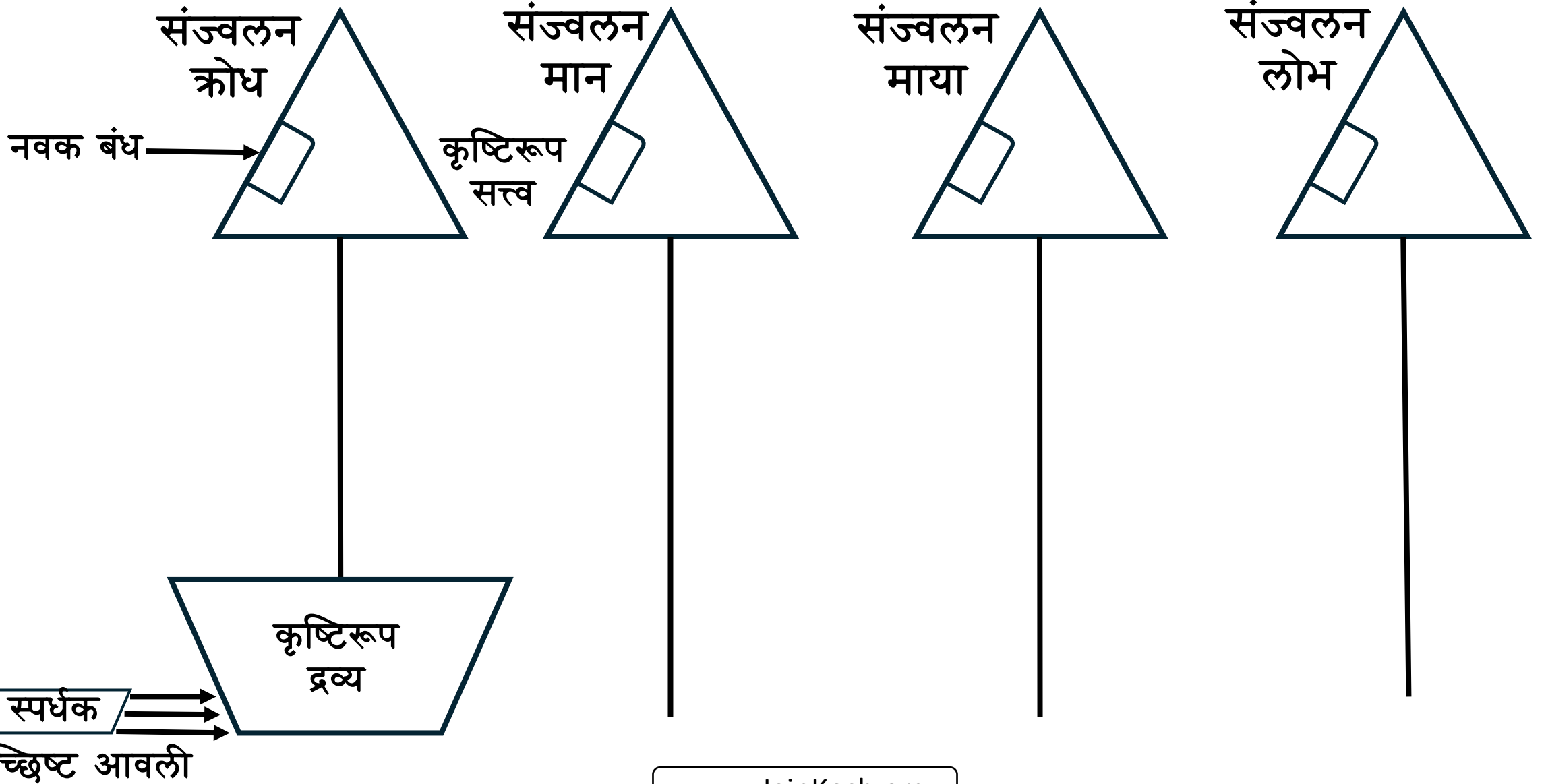
- कृष्टिवेदक को मोह का प्रथम स्थिति-बंध 4 मास प्रमाण और

स्थिति-सत्त्व

- 8 वर्ष प्रमाण स्थिति-सत्त्व शेष रहता है।

शेष कर्मों का
आलाप पूर्ववत्
है।

कृष्टिवेदक का प्रथम समय

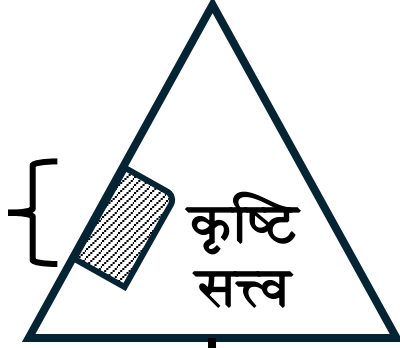


ताहे कोहुच्छिट्टुं, सव्वं घादी हु देसघादी हु ।
दोसमऊणआवलिणवकं ते फड्डुयगदाओ ॥513॥

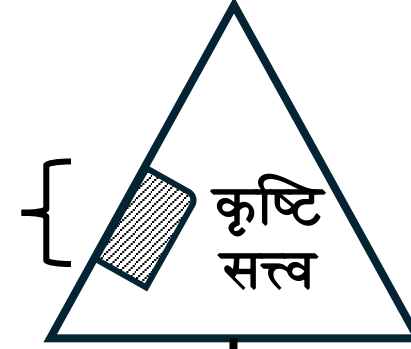
- अन्वयार्थः (ताहे) वहाँ (कोहुच्छिट्टुं) संज्वलन क्रोध की उच्छिष्टावलि के निषेक (सव्वं घादि) सर्वघातिरूप हैं और
- संज्वलन चतुष्क के (दोसमऊणआवलिणवकं) दो समय कम दो आवलिप्रमाण नवक समयप्रबद्ध हैं (ते) वे समयप्रबद्ध (देसघादी हु) देशघाति हैं और (फड्डुयगदाओ) स्पर्धक-स्वरूप हैं ॥513॥

कृष्टिवेदक के स्पर्धकरूप शेष सत्त्व

नवक बंध
4 मास +
1 अंतर्मुहूर्त



नवक बंध
4 मास +
1 अंतर्मुहूर्त



उच्छिष्ट
आवली



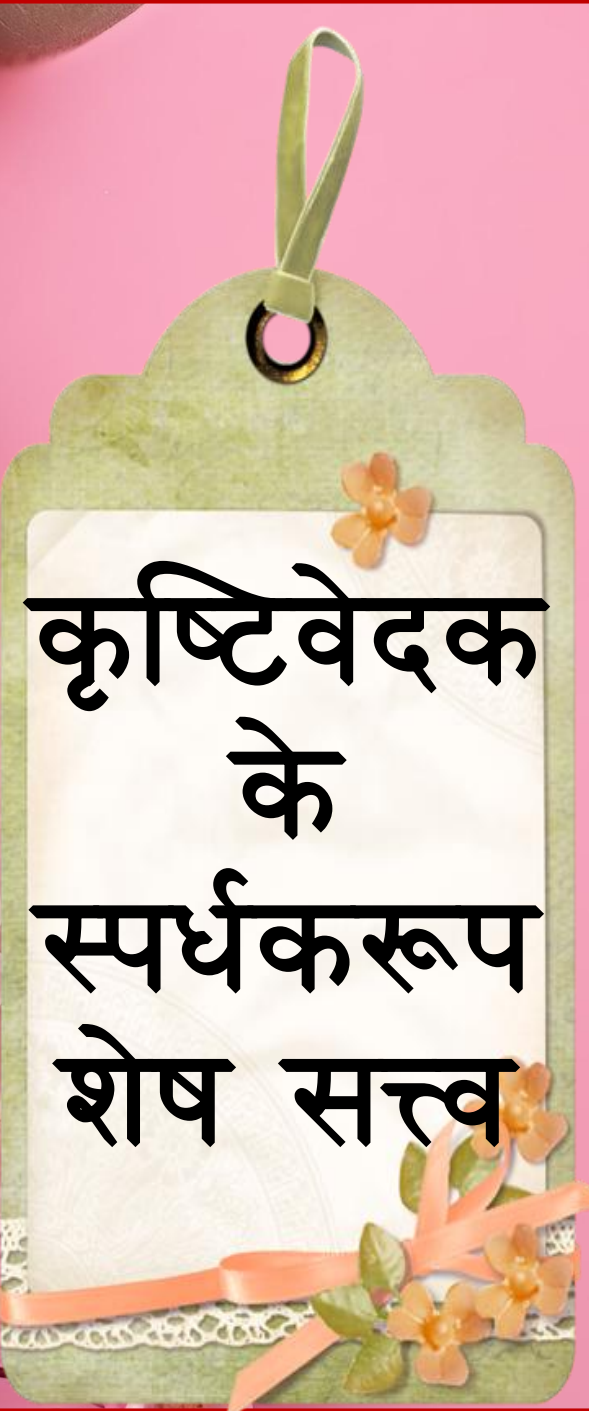
संज्वलन क्रोध



लता

दारु

शेष 3 संज्वलन



कृष्टिवेदक के स्पर्धकरूप शेष सत्त्व

कृष्टिवेदक के प्रथम समय में क्रोध की प्रथम स्थिति में जो उच्छिष्टावली प्रमाण निषेक हैं, वे सर्वघातिरूप हैं। उनमें लता और दारुरूप अनुभाग है।

संज्वलन का बंध और उदय अंतरकरण के बाद एक-स्थानीय हो गया था परंतु सत्त्व तो द्विस्थानीय बना हुआ ही है। इसलिए यहाँ उच्छिष्ट-आवली में सर्वघाती का भी सत्त्व कहा है।

ये स्पर्धक; उदयमान कृष्टियों में परिणमित होकर उदय में आते हैं। एक आवली काल में ये समाप्त हो जायेंगे।

नवक समयप्रबद्ध का सत्त्व

कृष्टिवेदक के प्रथम समय द्वितीय स्थिति में स्थित सर्व स्पर्धकों का द्रव्य कृष्टिरूप परिणत हो गया है । परंतु नवक समयप्रबद्ध का द्रव्य अभी भी स्पर्धक रूप है ।

यह नवक समयप्रबद्ध का द्रव्य (2 आवली - 2 समय) × समयप्रबद्ध प्रमाण है ।

इसकी स्थिति (4 मास + अंतर्मुहूर्त) है ।

इसमें अनुभाग देशघाति लतारूप है ।

ये एक-एक समय में कृष्टिरूप परिणत हो जाते हैं । इस प्रकार सर्व नवक समयप्रबद्ध का द्रव्य (2 आवली - 2) समय में कृष्टिरूप परिणत हो जाता है ।

लोहादो कोहादो, कारउ वेदउ हवे किट्टी ।
आदिमसंगहकिट्टीं, वेदयदि ण विदीय तिदियं च ॥514॥

- अन्वयार्थः (कारउ) कृष्टिकारक की (किट्टी) कृष्टियों का क्रम (लोहादो) लोभ से है और (वेदउ) कृष्टिवेदक की (किट्टी) कृष्टियों का क्रम (कोहादो) क्रोध से (हवे) है।
- यहाँ प्रथम क्रोध की (आदिमसंगहकिट्टीं) प्रथम संग्रह-कृष्टि का (वेदयदि) वेदन करता है। (विदीय तिदियं च ण) द्वितीय और तृतीय संग्रह-कृष्टियों का वेदन नहीं करता है ॥514॥

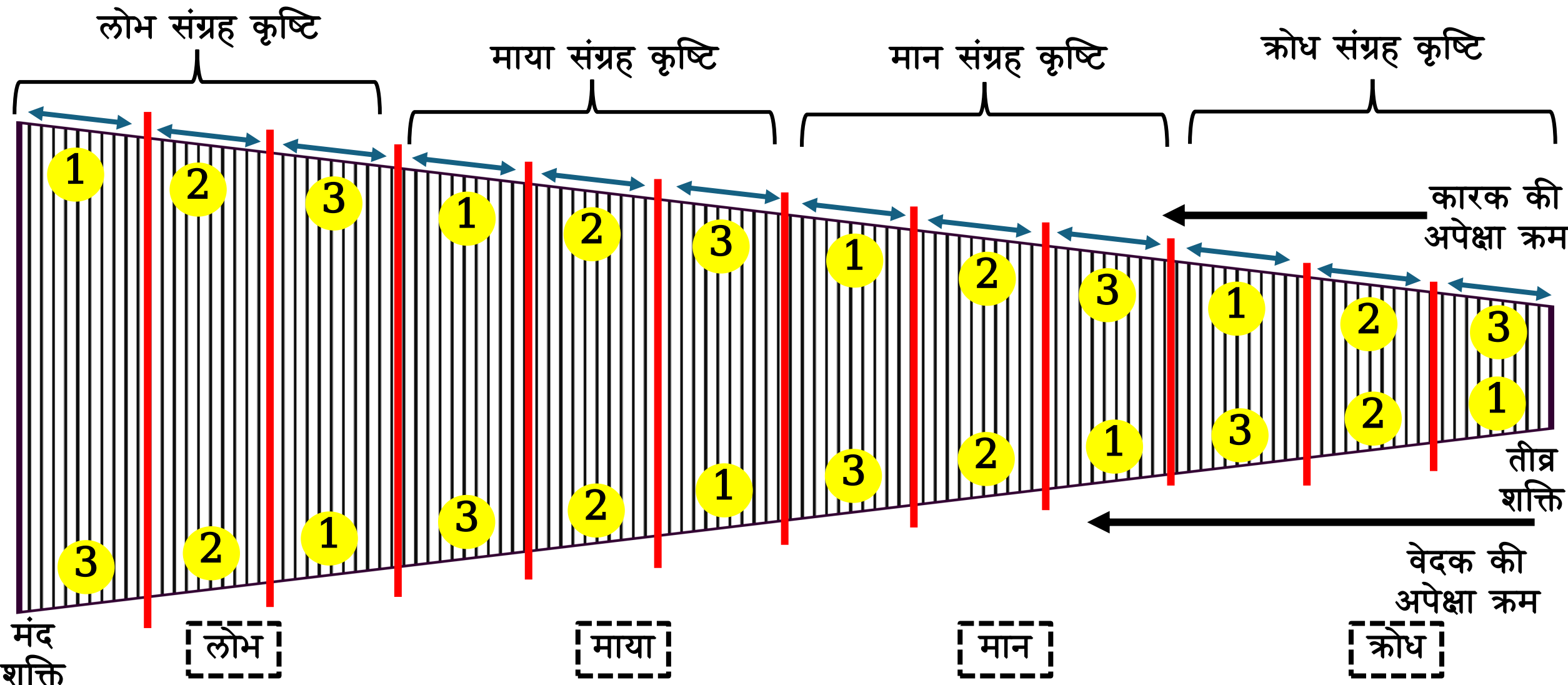
कृष्टिवेदक की कृष्टियों का क्रम

कृष्टिकरण में सर्वप्रथम लोभ की; फिर माया, मान, क्रोध की क्रम से कृष्टियाँ कही थीं। परंतु कृष्टिवेदन में सर्वप्रथम क्रोध की; फिर मान, माया, लोभ की कृष्टियों का क्रम से वेदन होता है।

कृष्टिकरण में जिसे तृतीय संग्रह कृष्टि कहा था, वह वेदन में प्रथम संग्रह कृष्टि है। जिसे प्रथम संग्रह कृष्टि कहा था, वह तृतीय संग्रह कृष्टि है।

ऐसा कहने का कारण यह दर्शाना है कि कृष्टिकरण में लोभ की जघन्य कृष्टि से ऊपर-ऊपर अधिक शक्ति वाली कृष्टियाँ हैं। ऐसा होने से क्रोध की तृतीय संग्रह में सबसे अधिक शक्ति है, द्वितीय में उससे कम, प्रथम में उससे भी कम शक्ति है।

वेदक पहले तीव्र शक्ति का अनुभव करता है। पश्चात् अनंतगुणी विशुद्धि बढ़ती जाने से हीन-हीन शक्ति वाली कृष्टियों को भोगता है। अतः वेदक की अपेक्षा तीव्र शक्ति वाली कृष्टि; प्रथम कृष्टि हुई। इसी प्रकार आगे की कृष्टियों का क्रम भी जानना।



कृष्टिवेदक की कृष्टियों का क्रम

किट्टीवेदगपढमे, कोहस्स य पढमसंगहादो दु ।
कोहस्स य पढमठिदी, पत्तो उव्वट्टुगो मोहे ॥515॥

- अन्वयार्थः (किट्टीवेदगपढमे) कृष्टिवेदक काल के प्रथम समय में (कोहस्स य पढमसंगहादो दु) क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि में से (कोहस्स य) क्रोध की (पढमठिदी पत्तो) प्रथम स्थिति प्राप्त करता है और (मोहे) मोहनीय कर्म का (उव्वट्टुगो) अपवर्तना घात करता है ॥515॥

कृष्टिवेदक के कार्य

कृष्टिवेदक; प्रथम समय में संज्वलन क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि से अपकर्षण करके प्रथम संग्रह कृष्टि की प्रथम स्थिति बनाता है ।

प्रथम स्थिति का आयाम (प्रथम संग्रह कृष्टि का वेदक काल + 1 आवली) प्रमाण है । एक अंतिम आवली उच्छिष्टावली के रूप में छोड़ दी जाती है ।

अपकृष्ट द्रव्य के एक भाग द्वारा प्रथम स्थिति बनाई जाती है। शेष बहुभाग 8 वर्ष प्रमाण द्वितीय स्थिति में ही यथायोग्य दिया जाता है ।

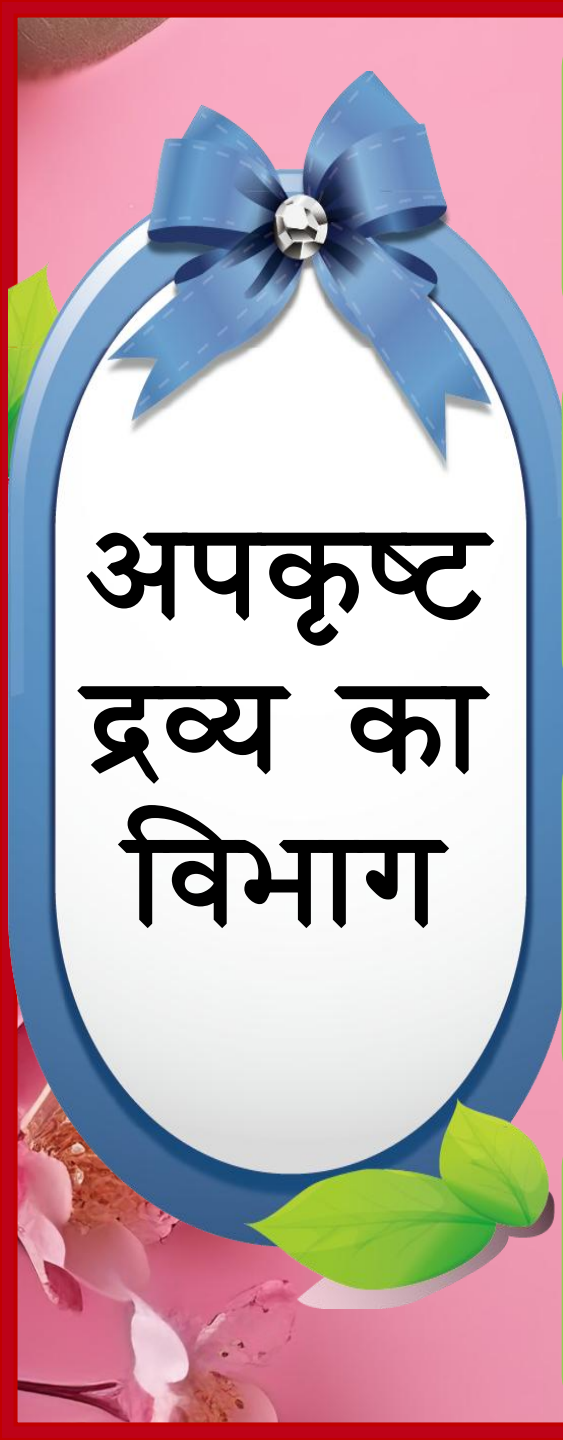
$$\text{अपकृष्ट द्रव्य} \frac{व १२ + | 13}{ओ \times 24}$$

$$\frac{व १२ + | 13}{ओ \times 24 \times \frac{प}{०}}$$

प्रथम स्थिति का द्रव्य

$$\frac{व १२ + | 13 \times \left(\frac{प}{०} - 1\right)}{ओ \times 24 \times \frac{प}{०}}$$

द्वितीय स्थिति का द्रव्य



अपकृष्ट द्रव्य का विभाग

प्रथम स्थिति में यह अपकृष्ट द्रव्य असंख्यात गुणित क्रम से प्रथम स्थिति के अंत निषेक तक दिया जाता है ।

अर्थात् उदय समय में सबसे कम द्रव्य, उससे असंख्यात गुणा दूसरे निषेक में, उससे असंख्यात गुणा तीसरे निषेक में – इस क्रम से द्रव्य गुणश्रेणीरूप से दिया जाता है । यह उदयादि गुणश्रेणी है ।

द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक में प्रथम स्थिति के अंतिम निषेक में देय द्रव्य से असंख्यात गुणा द्रव्य दिया जाता है । यहाँ इस प्रकार असंख्यात गुणा होने का कारण द्वितीय स्थिति का 8 वर्ष मात्र होना है ।

इसके पश्चात् द्वितीय निषेक में चयहीन क्रम से द्रव्य अतिस्थापनावली के पूर्व तक दिया जाता है ।

क्रोध का कुल अपकृष्ट द्रव्य

क्रोध की द्वितीय एवं तृतीय संग्रह कृष्टि के द्रव्य का भी अपकर्षण होता है, जिसे द्वितीय स्थिति में ही दिया जाता है। इसका द्रव्य प्रथम स्थिति को प्राप्त नहीं होता।

यह द्रव्य प्रथम कृष्टि में मिलाने पर

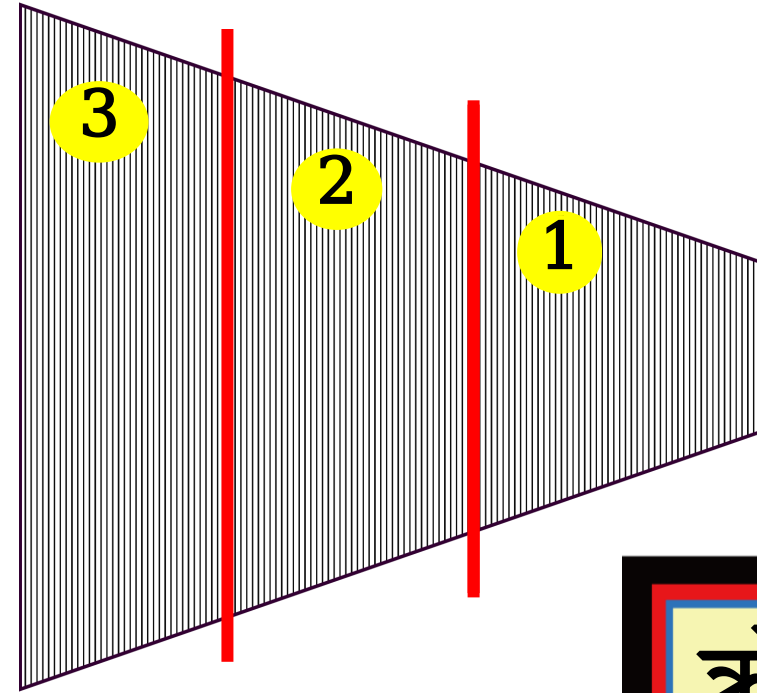
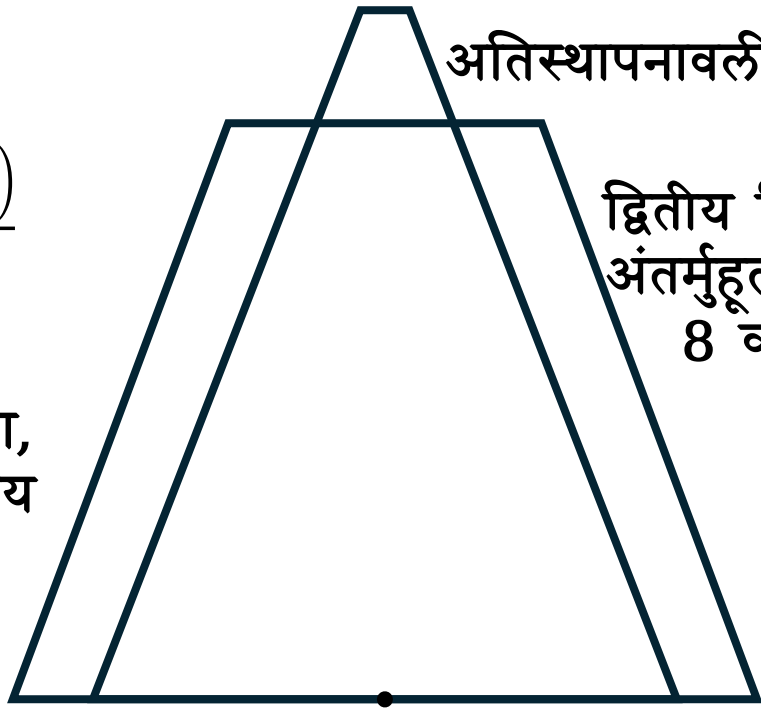
$$\frac{व१२ + 13 \times \left(\frac{प}{०} - 1 \right)}{24 \times ओ \times \frac{प}{०}} + \frac{व१२+}{24 \times ओ} + \frac{व१२+}{24 \times ओ}$$

एक कम को गौण करके पल्य/असं. का अपवर्तन करके जोड़ने पर
क्रोध का कुल अपकृष्ट द्रव्य = $\frac{व१२+ \times 15}{ओ \times 24}$

देय द्रव्य -

$$\frac{व १२+ \times 15 \times \left(\frac{प}{०}-1\right)}{ओ \times 24 \times \frac{प}{०}}$$

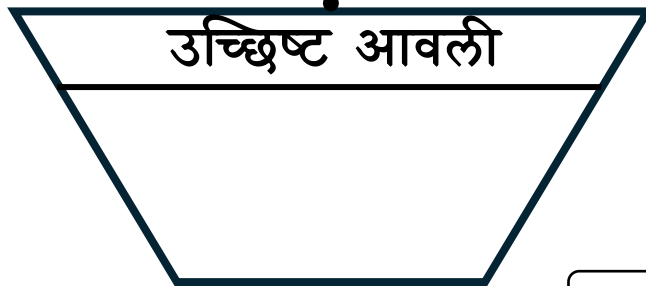
प्रथम का बहुभाग,
द्वितीय और तृतीय
कृष्टि का द्रव्य



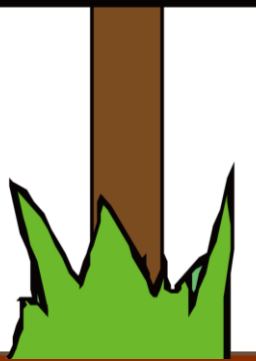
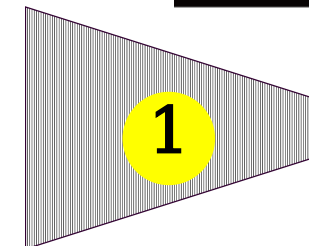
क्रोध प्रथम
संग्रह की
प्रथम स्थिति

देय द्रव्य - एकभाग

$$\frac{व १२ + | 13}{24 \times ओ \times \frac{प}{०}}$$



प्रथम
स्थिति





कृष्टि वेदक के शेष समय

जैसे कृष्टिवेदक प्रथम समय में उदयादि गुणश्रेणी करता है, उसी प्रकार प्रत्येक समय में भी करता है । द्रव्य असंख्यात गुणा अपकर्षित करता है ।

प्रत्येक समय गलितावशेष गुणश्रेणी होने से एक-एक समय कम गुणश्रेणी आयाम में द्रव्य देता है ।

कृष्टिकारक के अनुभागकांडकघात द्वारा अनुभाग का नाश होता था । अब कृष्टि वेदक के पहले समय से 12 कृष्टियों का अनुभाग अपवर्तनाघात प्रारंभ होता है ।

प्रत्येक समय में अनुभाग के अनंत गुणा घात होने को अनुसमय अपवर्तनाघात कहते हैं।

कृष्टि-द्रव्य का स्वस्थान अल्प-बहुत्व

प्रत्येक कषाय की अपनी संग्रह कृष्टियों में अल्प-बहुत्व का विचार; स्वस्थान अल्प-बहुत्व है ।

समस्त 12 संग्रह कृष्टियों के द्रव्य के अल्प-बहुत्व का विचार करना परस्थान अल्प-बहुत्व है ।

संज्वलन क्रोध

संज्वलन मान

कृष्टि	अल्प-बहुत्व
द्वितीय संग्रह कृष्टि	स्तोक
तृतीय संग्रह कृष्टि	+
प्रथम संग्रह कृष्टि	संख्यात गुणा

कृष्टि	अल्प-बहुत्व
प्रथम संग्रह कृष्टि	स्तोक
द्वितीय संग्रह कृष्टि	+
तृतीय संग्रह कृष्टि	+

संज्वलन मान की तरह माया, लोभ का स्वस्थान अल्प-बहुत्व जानना ।



परस्थान
अल्प-
बहुत्व

कृष्टि	अल्प-बहुत्व
मान संज्वलन - प्रथम कृष्टि	स्तोक
मान संज्वलन - द्वितीय कृष्टि	+
मान संज्वलन - तृतीय कृष्टि	+
क्रोध संज्वलन - द्वितीय कृष्टि	+
क्रोध संज्वलन - तृतीय कृष्टि	+
माया संज्वलन - प्रथम कृष्टि	+
माया संज्वलन - द्वितीय कृष्टि	+
माया संज्वलन - तृतीय कृष्टि	+
लोभ संज्वलन - प्रथम कृष्टि	+
लोभ संज्वलन - द्वितीय कृष्टि	+
लोभ संज्वलन - तृतीय कृष्टि	+
क्रोध संज्वलन - प्रथम कृष्टि	संख्यात गुणा

पढमस्स संगहस्स य, असंखभागा उदेदि कोहस्स ।
बंधेवि तहा चेव य, माणतियाणं तहा बंधे ॥516॥

- अन्वयार्थः कृष्टिवेदककाल के प्रथम समय में (कोहस्स) क्रोध की (पढमस्स संगहस्स य) प्रथम संग्रह-कृष्टि की (असंखभागा) असंख्यात बहुभाग कृष्टियाँ (उदेदि) उदय को प्राप्त होती हैं और (बंधेवि) बन्ध में भी (तहा चेव) वैसा ही है अर्थात् प्रथम संग्रह-कृष्टि की असंख्यात बहुभाग कृष्टियाँ बन्ध को प्राप्त होती हैं।
- (माणतियाणं) मान, माया और लोभ – इन तीनों के (बंधे तहा) बंधसंबंधी भी ऐसा ही जानना चाहिए ॥516॥

उदय कृष्टि

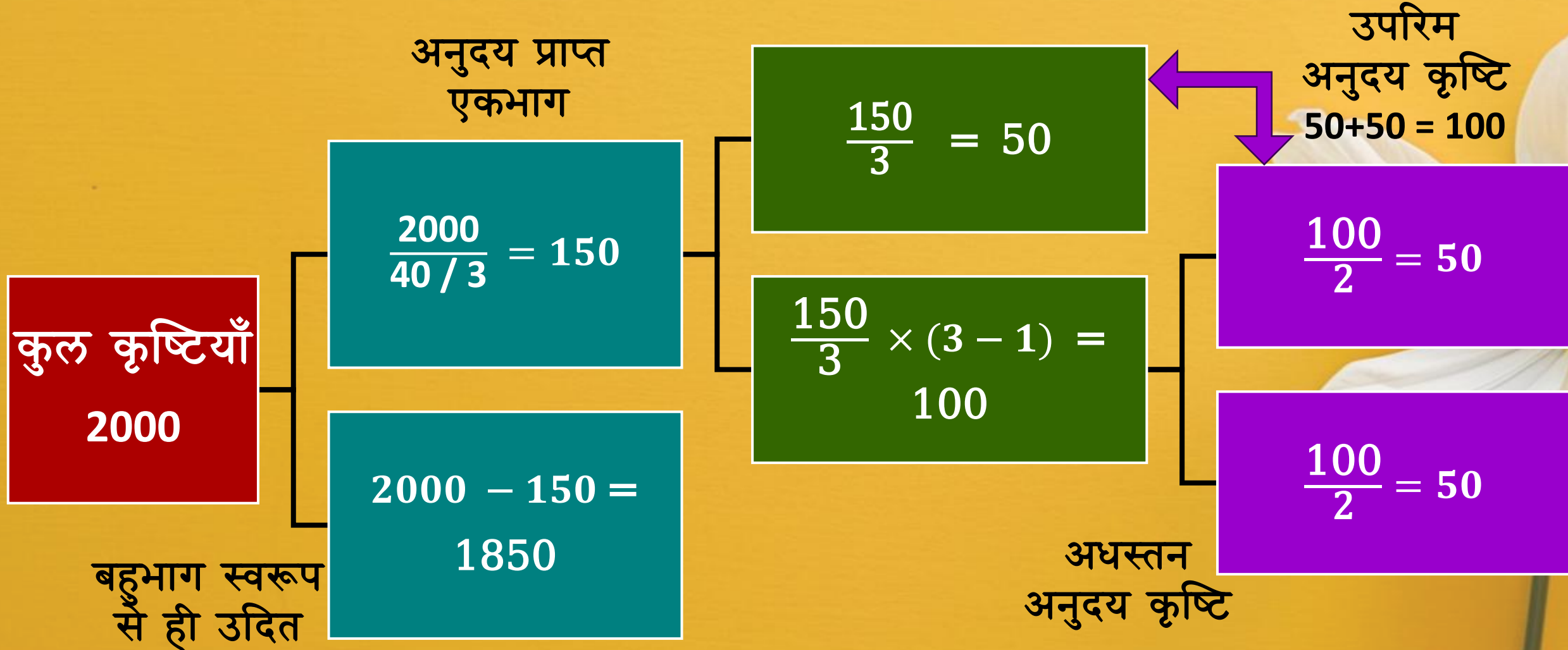
कृष्टिवेदक काल के प्रथम समय में प्रथम संग्रह कृष्टि का ही उदय एवं बंध होता है ।

क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि की अंतर कृष्टियों के प्रमाण को $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ का भाग देकर मध्य की बहुभाग प्रमाण कृष्टियों का उदय आता है ।

एक भाग प्रमाण ऊपर एवं नीचे की कृष्टियाँ उदय में नहीं आती हैं ।

उदाहरण: सर्व कृष्टियाँ = 2000 । $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}} = \frac{40}{3}$

उदय-अनुदयगत कृष्टियाँ – अंक संदृष्टि



बंध कृष्टि

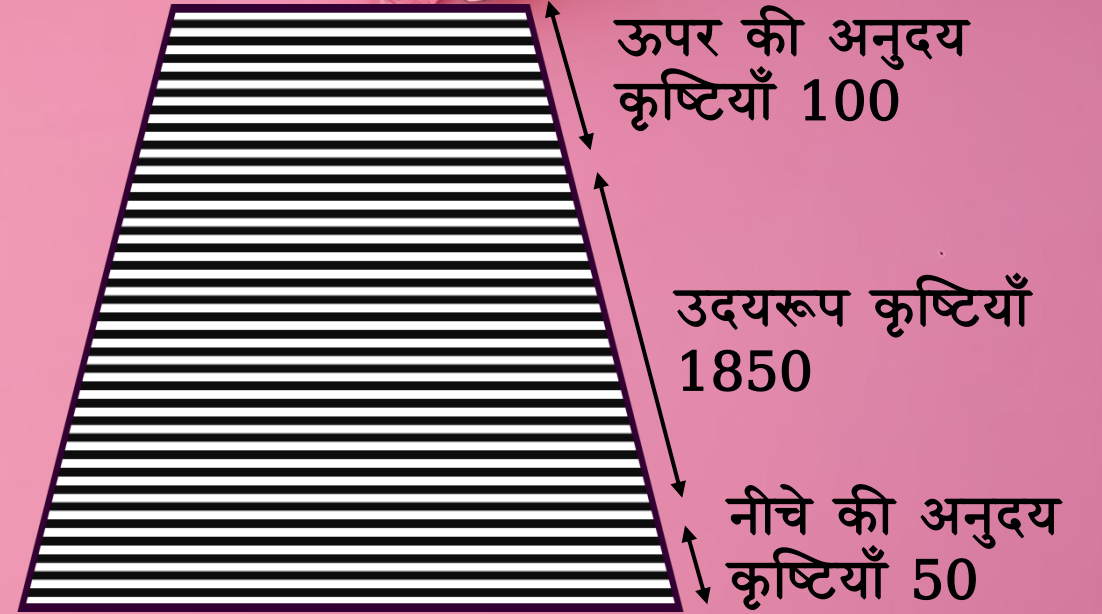
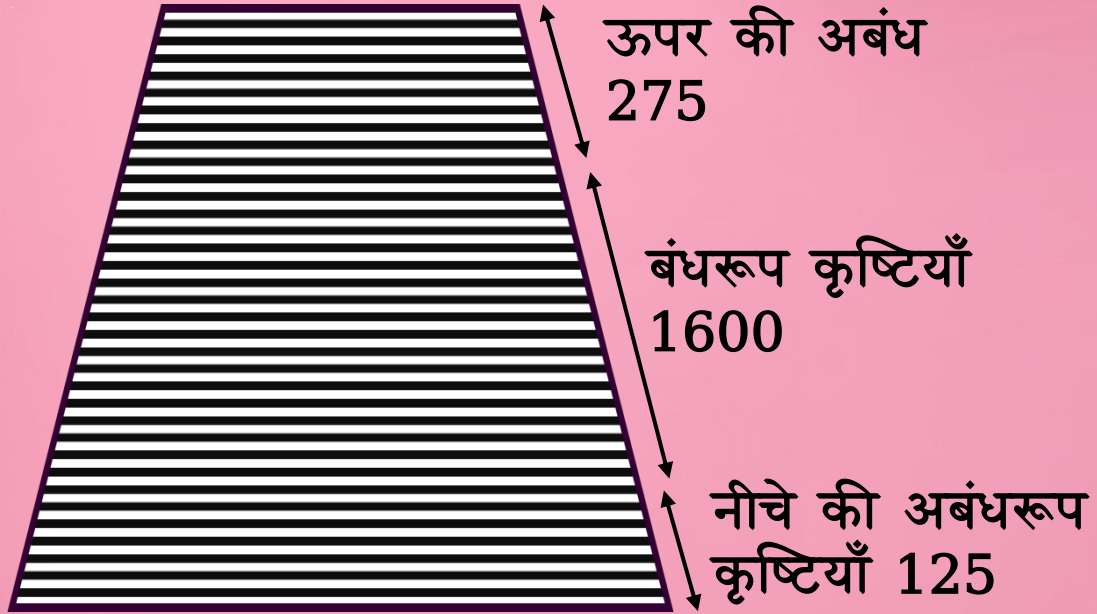
बंध भी नीचे और ऊपर की असंख्यातवें भागप्रमाण कृष्टियों को छोड़कर मध्य की बहुभाग प्रमाण कृष्टियों का होता है ।

उदय से बंध अनंतगुणाहीन है । अधस्तन जिन कृष्टियों का उदय है, उनसे कुछ ऊपर जघन्य बंध है तथा उपरितन जिन कृष्टियों का उदय है, उनसे कुछ नीचे उत्कृष्ट कृष्टि का बंध है ।

यहाँ दृष्टांत में अधस्तन 125, उपरितन 275 कृष्टियाँ छोड़कर मध्य की 1600 कृष्टियों का बंध होता है । इसी प्रकार वास्तविक गणित में जानना ।

यहाँ कृष्टिवेदक काल से कृष्टिरूप ही बंध होता है । स्पर्धकरूप बंध की व्युच्छिन्ति हुई ।

क्रोध की बंध-उदय कृष्टियाँ



इसी प्रकार मान, माया, लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि का बंध होता है ।

उसमें भी क्रोध की तरह मध्य की बहुभाग प्रमाण कृष्टियों का बंध होता है ।

मानादिक की अभी कोई प्रथम स्थिति नहीं होने से किसी कृष्टि का उदय नहीं आता ।

कोहस्स पढमसंगह-किट्टिस्स य हेट्टिमणुभयट्टाणा ।
तत्तो उदयट्टाणा, उवरिं पुण अणुभयट्टाणा ॥517॥
उवरिं उदयट्टाणा, चत्तारि पदाणि होति अहियकमा ।
मज्झे उभयट्टाणा, होति असंखेज्जसंगुणिया ॥518॥

- अन्वयार्थः (कोहस्स पढमसंगहकिट्टिस्स य) क्रोध की प्रथम संग्रह-कृष्टि की (हेट्टिमणुभयट्टाणा) नीचे की अनुभय कृष्टियाँ,
- (तत्तो) उसके अनन्तर (उदयट्टाणा) नीचे की ही केवल उदयरूप कृष्टियाँ,
- (पुण) पुनः (उवरिं) ऊपर की (अणुभयट्टाणा) अनुभय कृष्टियाँ,
- पुनः (उवरिं उदयट्टाणा) ऊपर की केवल उदयरूप कृष्टियाँ
- (चत्तारि पदाणि) ये चार पद (अहियकमा) क्रम से अधिक (होति) हैं।
- (मज्झे उभयट्टाणा) मध्य की उभयरूप कृष्टियाँ (असंखेज्जसंगुणिया) असंख्यातगुणी (होति) हैं ॥517-518॥

क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि में अल्प-बहुत्व

कृष्टि	अल्प-बहुत्व
अधस्तन अनुभय कृष्टियाँ	स्तोक
अधस्तन उदय-मात्र कृष्टियाँ	+
उपरितन अनुभय कृष्टियाँ	+
उपरितन उदयमात्र कृष्टियाँ	+
मध्य की उदयरूप कृष्टियाँ	असंख्यात गुणा

सर्वत्र अधिक का प्रमाण पूर्व प्रमाण को पल्य/असंख्यात से भाग देकर एकभाग प्रमाण है।

अनुभय कृष्टि

जिनका उदय भी नहीं है और बंध भी नहीं है। ऊपर और नीचे – दोनों ही ओर इस प्रकार की अनुभय कृष्टियाँ हैं।

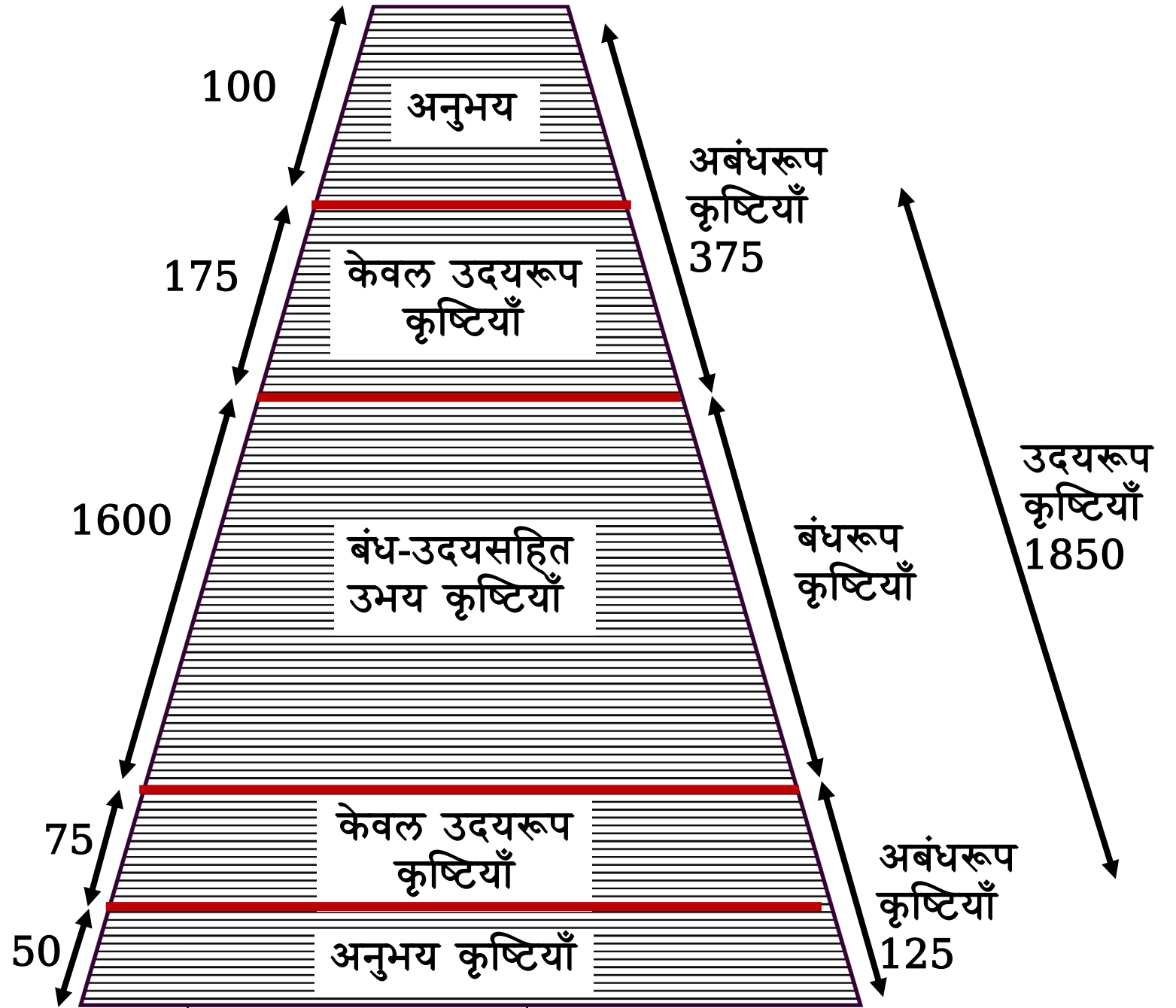
उदय कृष्टि

जिनका मात्र उदय है, बंध नहीं है। ऐसी कृष्टियाँ भी नीचे-ऊपर दोनों तरफ होती हैं।

उभय कृष्टि

जिनका बंध भी है, उदय भी है। ऐसी मध्य की बहुभाग कृष्टियाँ हैं।

उदय,
अनुदय,
बंध और
अबंध
कृष्टियाँ



विदियादिसु चउठाणा, पुव्विल्लेहि असंखगुणहीणा ।
तत्तो असंखगुणिदा, उवरिमणुभया तदो उभया ॥519॥

- अन्वयार्थः (विदियादिसु) द्वितीयादि समयों में (चउठाणा) चार स्थान (पुव्विल्लेहि) पूर्व की अपेक्षा (असंखगुणहीणा) असंख्यातगुणे हीन हैं।
- (तत्तो) उससे (उवरिमणुभया) ऊपर की अनुभय कृष्टियाँ (असंखगुणिदा) असंख्यातगुणित हैं।
- (तदो) उससे (उभया) उभय कृष्टियाँ असंख्यातगुणित हैं ॥519॥

कृष्टिवेदक का द्वितीय समय

जो पूर्व में अधस्तन अनुभय कृष्टियाँ हैं, उनका असंख्यात बहुभाग उभयरूप हो जाता है। अर्थात् अब कम शक्तिवाली कृष्टियाँ अधिक उदय में आती हैं एवं बंध भी हीन शक्तिवाली कृष्टियों का होता है।

अधस्तन एक भाग अनुभय कृष्टियाँ हैं, उनका बहुभाग 'केवल उदयरूप' होता है। शेष रहा एक भाग अनुभय अधस्तन कृष्टिरूप होता है।

अंक संदृष्टि में - 50 अधस्तन अनुभय कृष्टियाँ थीं।

$\frac{50}{5} = 10$ एकभाग। शेष $50 - 10 = 40$ बहुभाग कृष्टियाँ हैं। ये अब उभयरूप होती है।

$\frac{\text{एकभाग } 10 \times 3}{5} = 6$ अधस्तन कृष्टियाँ 'मात्र बंधरूप' हैं।

4 अधस्तन कृष्टियाँ 'अनुभयरूप' हैं।

पूर्व समय में जो केवल उदयरूप अधस्तन कृष्टियाँ थीं वे भी अब उभयरूप हो जाती हैं।

उपरितन कृष्टियों में परिवर्तन

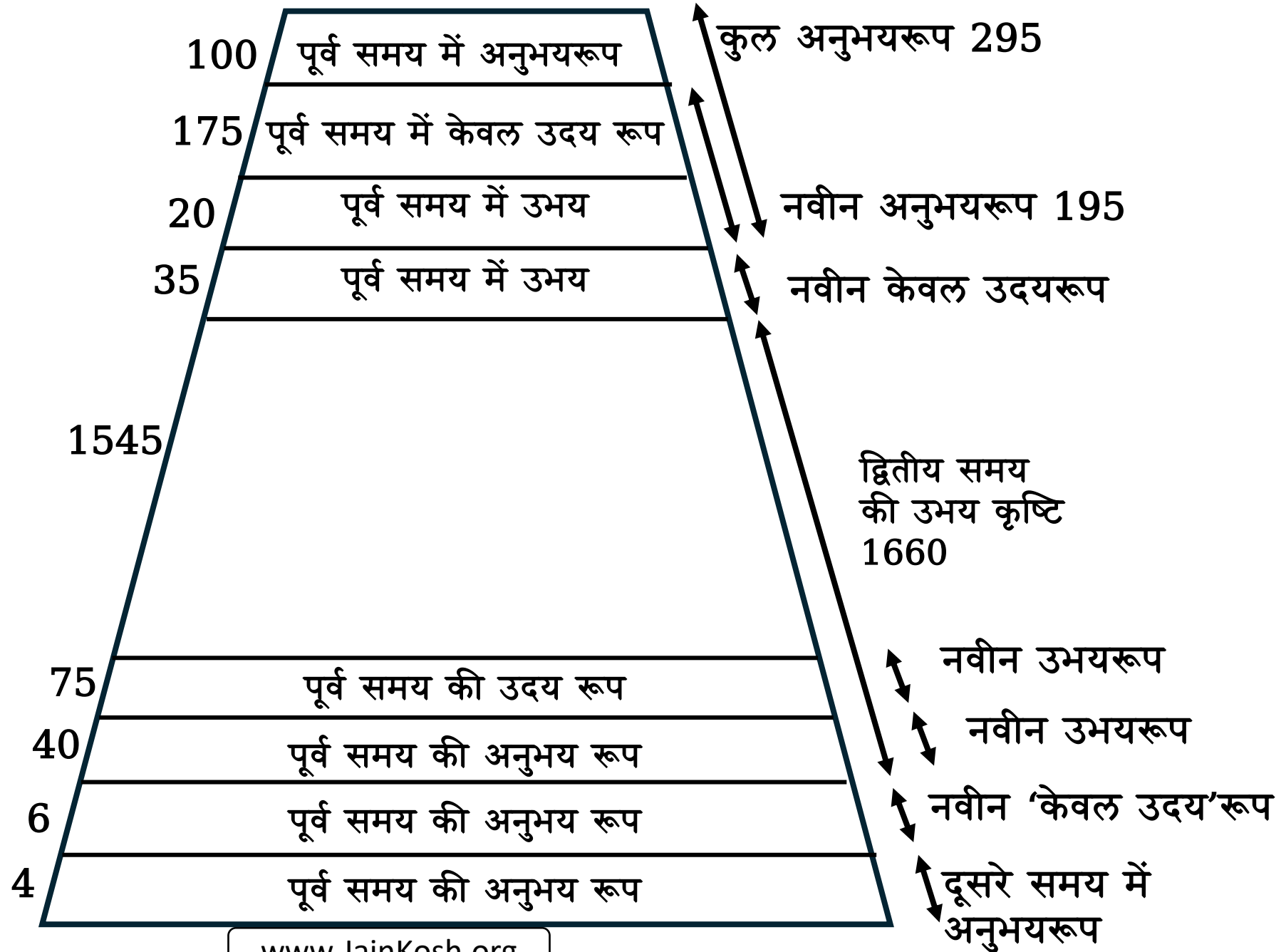
इसी प्रकार उपरितन 'केवल उदय' कृष्टियाँ थी, वे सर्व अगले समय में अनुभयरूप हो जाती हैं। क्योंकि प्रत्येक समय विशुद्धि बढ़ने से बंध और उदय अनंत गुणा हीन होता है।

पूर्व समय में जो उभय रूप कृष्टियाँ थी, उनमें से कुछ कृष्टियाँ अनुभयरूप होती हैं, उनके आगे की कुछ कृष्टियाँ 'केवल उदयरूप' होती हैं।

द्वितीय
समय
की
उभय
कृष्टियाँ



द्वितीय समय
में उदय,
अनुदय,
उभय और
अनुभय
कृष्टियाँ



पूर्वोक्त कृष्टियों का अल्प- बहुत्व

यहाँ 50 से 4 असंख्यात गुणाहीन है। इसी प्रकार से शेष जानना।

क्र	कृष्टियाँ	प्रथम समय	द्वितीय समय
1	नीचे की अनुभय कृष्टियाँ	50	असंख्यात गुणाहीन 4
2	नीचे की 'केवल उदय' कृष्टियाँ	75	असंख्यात गुणाहीन 6
3	ऊपर की अनुभय कृष्टियाँ	100	असंख्यात गुणाहीन 20
4	ऊपर की 'केवल उदय' कृष्टियाँ	175	असंख्यात गुणाहीन 35
5	द्वितीय समय में ऊपर की नयी अनुभय कृष्टियाँ	--	असंख्यात गुणा 195
6	मध्य की उभय कृष्टियाँ	1600	विशेष अधिक 1660

कृष्टि परिवर्तन का भावार्थ

ऊपर अधिक कृष्टियाँ अनुभयरूप हुई याने अधिक शक्ति वाली कृष्टियाँ ना बंध रही है, ना उदित हो रही है ।

नीचे वाली कृष्टियाँ और आगे जाकर बंधती एवं उदित होती हैं अर्थात् हीन शक्ति वाली कृष्टियाँ बंध रही एवं उदय में आ रही ।

चूंकि प्रतिसमय विशुद्धि अनंत गुणा बढ़ती जाती है । इसलिये बंध और उदय प्रतिसमय अनंत गुणाहीन होता जाता है ।

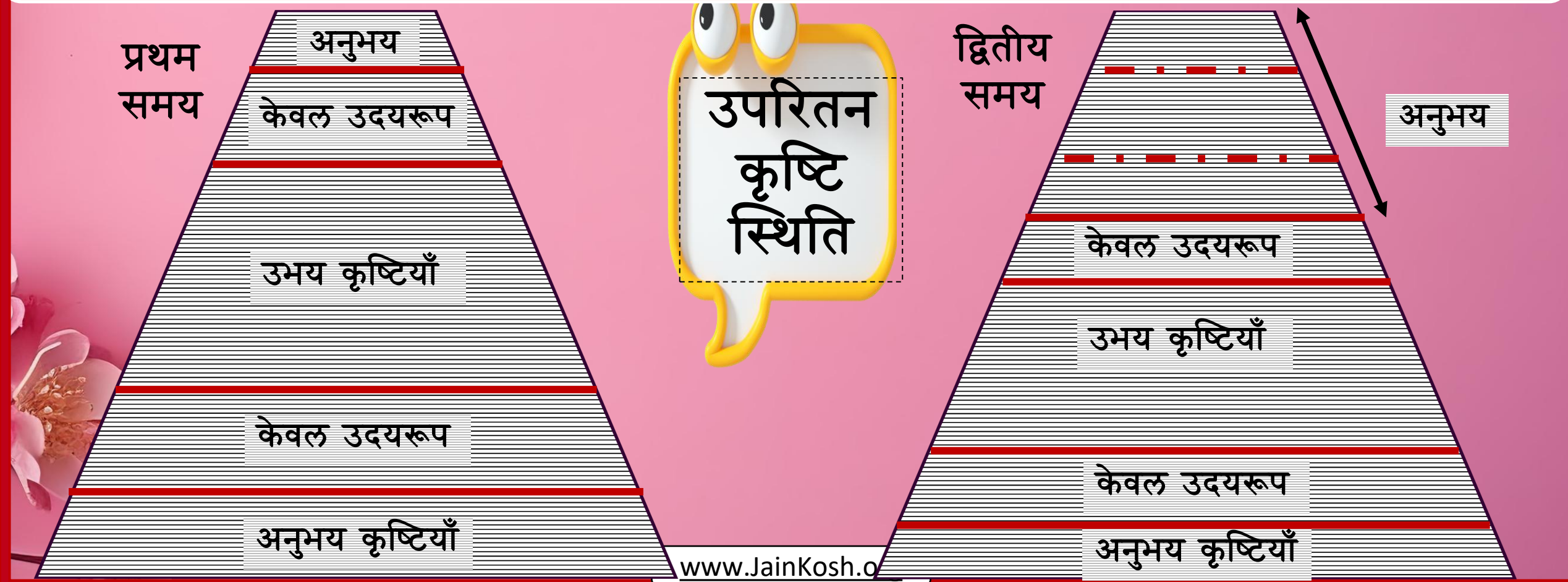
इसी प्रकार तृतीयादि समयों में अल्प-बहुत्व जानना चाहिए ।

पुव्विल्लबंधजेट्टा, हेट्टासंखेज्जभागमोदरिय ।
संपडिगो चरिमोदयवरमवरं अणुभयाणं च ॥520॥

- अन्वयार्थः (पुव्विल्लबंधजेट्टा) पूर्वसमय में बंध की उत्कृष्ट कृष्टि से (हेट्टा) नीचे (असंखेज्जभागं ओदरिय) असंख्यातवें भाग प्रमाण उतरकर (संपडिगो) वर्तमान समय में (चरिमोदयवरं) अंतिम उदयरूप उत्कृष्ट कृष्टि है (च) और उसके ऊपर (अणुभयाणं अवरं) अनुभय की जघन्य कृष्टि है ॥520॥

पूर्व समय की जो उत्कृष्ट बंध कृष्टि है, वहाँ से असंख्यातवें भाग प्रमाण नीचे उतरकर द्वितीय समय में 'केवल उदय' रूप कृष्टि की अंतिम कृष्टि है। याने इस 'केवल उदय' कृष्टि की अंतिम के ऊपर सब कृष्टियाँ 'अनुभय' रूप हो गयी।

अंतिम 'केवल उदय' कृष्टि की अनंतर कृष्टि अनुभय कृष्टि की जघन्य कृष्टि है।



हेट्टिमणुभयवरादो, असंखबहुभागमेत्तमोदरिय ।
संपडि बंधजहण्णं, उदयुक्कस्सं च होदित्ति ॥521॥

- अन्वयार्थः (हेट्टिमणुभयवरादो) नीचे की अनुभय की उत्कृष्ट कृष्टि से (असंखबहुभागमेत्तं) असंख्यात बहुभागमात्र कृष्टियाँ (ओदरिय) नीचे उतरकर (संपडि बंधजहण्णं) वर्तमान बन्ध की जघन्य (च) और (उदयुक्कस्सं) केवल उदय की उत्कृष्ट कृष्टि (होदित्ति) है – ऐसा जानना चाहिए ॥521॥



अधस्तन कृष्टियाँ

पूर्व समय की नीचे की अनुभय कृष्टि की उत्कृष्ट कृष्टि से इसी के असंख्यात बहुभाग मात्र कृष्टि नीचे उतरकर वर्तमान बंध की (याने उभय कृष्टि की) जघन्य कृष्टि होती है ।

इससे नीचे अगली कृष्टि 'केवल उदय' कृष्टियों की उत्कृष्ट कृष्टि है ।

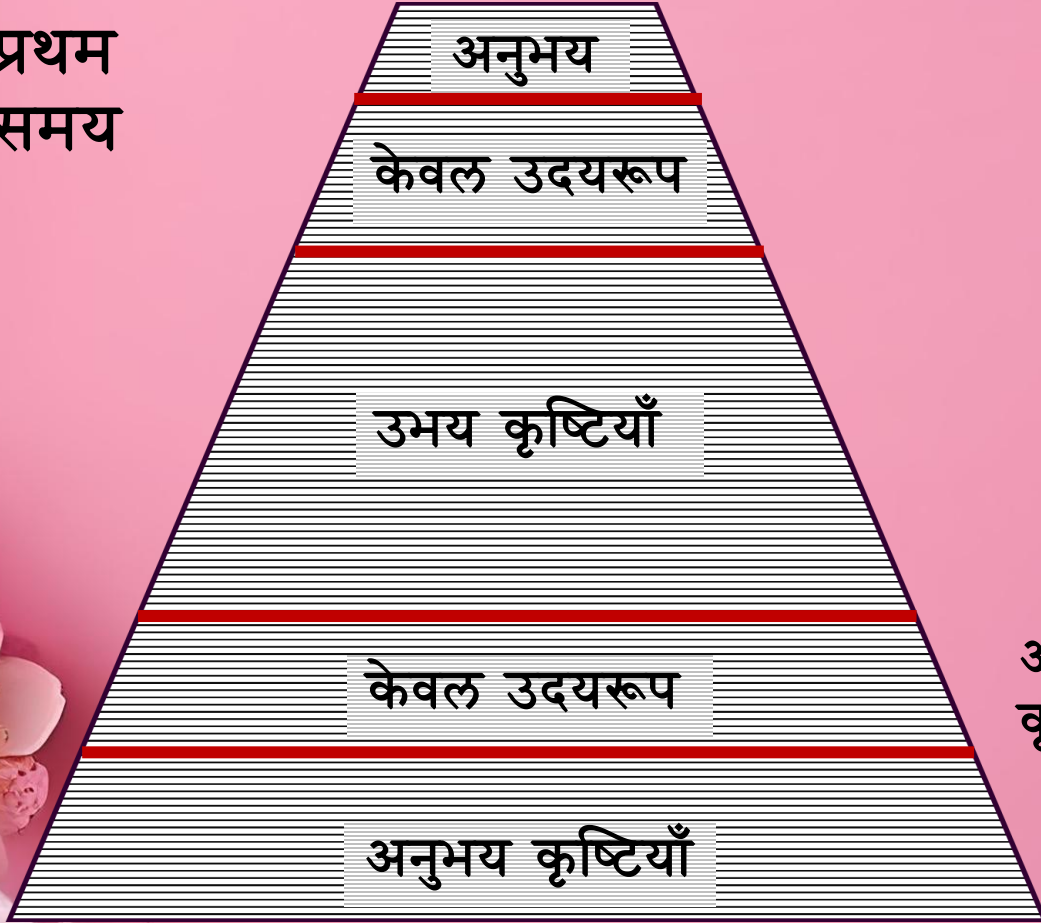
इससे पूर्व समय की नीचे की 'केवल उदय' कृष्टियों के असंख्यातवें भाग प्रमाण कृष्टि नीचे उतरकर 'केवल उदय' कृष्टियों की जघन्य कृष्टि है ।

इससे नीचे शेष रही कृष्टियाँ अनुभय कृष्टि है ।

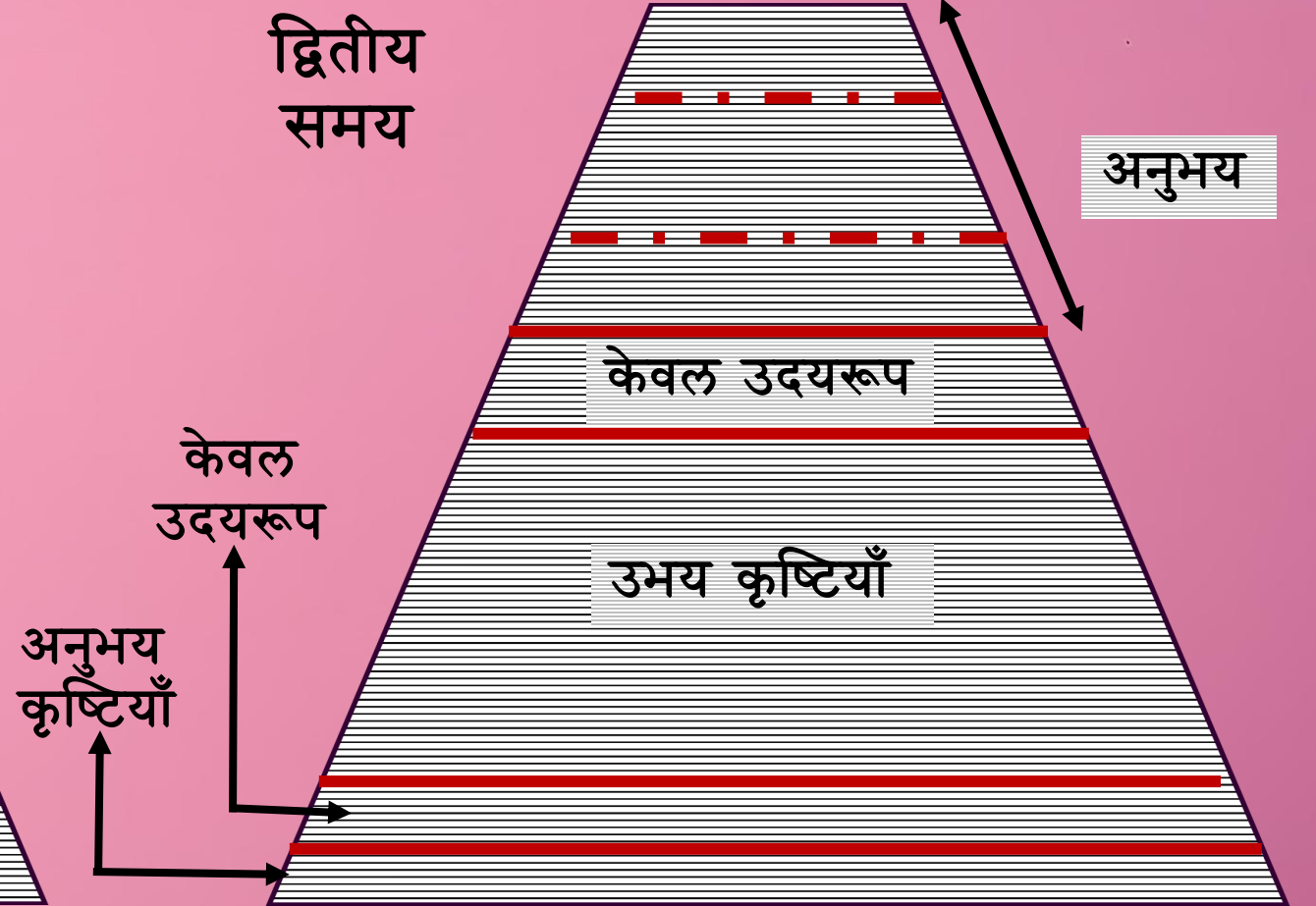
ये अनुभय कृष्टियाँ पूर्व की अनुभय कृष्टियों का असंख्यातवां भाग है ।

अधस्तन कृष्टि स्थिति

प्रथम
समय



द्वितीय
समय



पडिसमयं अहिगदिणा, उदये बंधे च होदि उक्कस्सं ।
बंधुदये च जहण्णं, अणंतगुणहीणया किट्ठी ॥522॥

- अन्वयार्थः (पडिसमयं) प्रत्येक समय में (अहिगदिणा) सर्प की चाल के समान (उदये बंधे च) उदय और बंध में (उक्कस्सं किट्ठी) उत्कृष्ट कृष्टि (च) और (बंधुदये) बंध और उदय में (जहण्णं) जघन्य कृष्टि (अणंतगुणहीणया) क्रम से अनन्तगुणी हीन हैं ॥522॥

बंध- उदय कृष्टियाँ

इस प्रकार सर्वकृष्टियों की मध्यवर्ती असंख्यात बहुभाग कृष्टियाँ बंधरूप हैं । इन अनुभागवाली कृष्टियों का उदय भी है ।

बंध कृष्टियों से उदय कृष्टियाँ ऊपर और नीचे कुछ अधिक हैं ।

सबसे हीन अनुभागयुक्त कृष्टि को जघन्य कृष्टि कहते हैं तथा सबसे अधिक अनुभागयुक्त कृष्टि को उत्कृष्ट कृष्टि कहते हैं ।

उत्कृष्ट उदय-बंध कृष्टियों का विचार

प्रथम समय की उत्कृष्ट उदय कृष्टि से तत्समय की उत्कृष्ट बंध कृष्टि अनंतगुणाहीन है ।

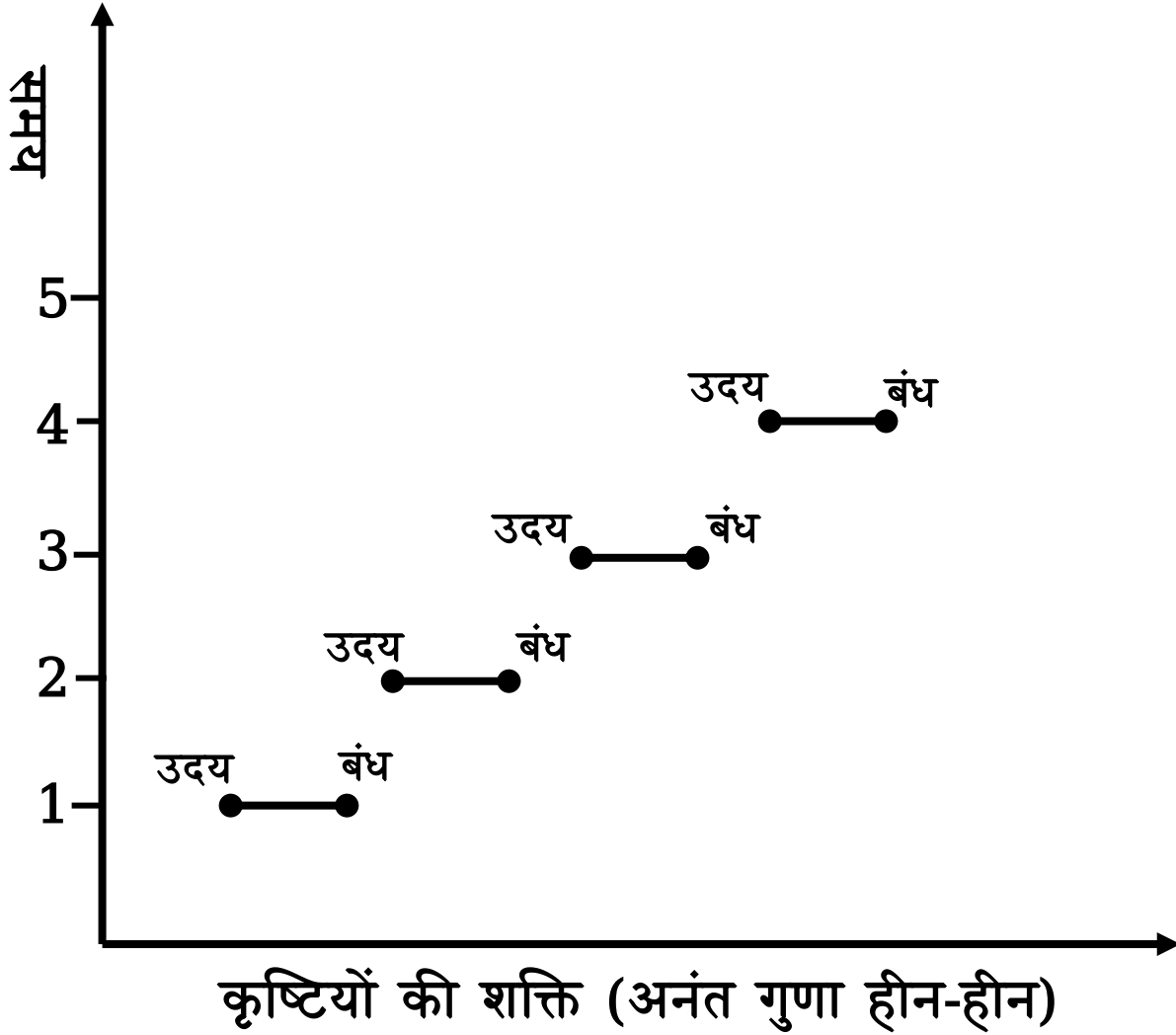
प्रथम समय की उत्कृष्ट बंध कृष्टि से द्वितीय समय की उत्कृष्ट उदय कृष्टि अनंतगुणाहीन है ।

द्वितीय समय की उत्कृष्ट उदय कृष्टि से तत्समय की उत्कृष्ट बंध कृष्टि अनंतगुणाहीन है ।

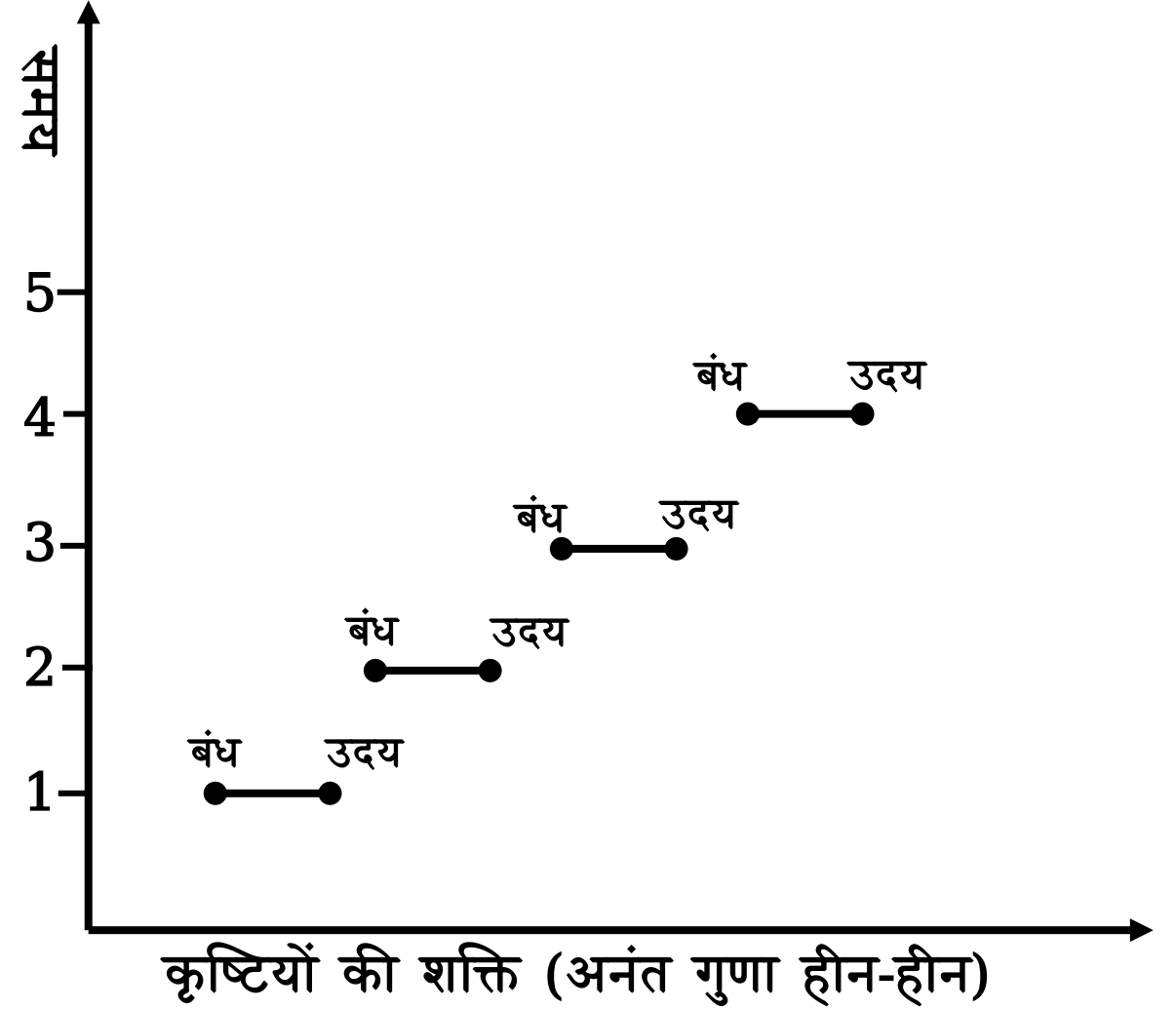
द्वितीय समय की उत्कृष्ट बंध कृष्टि से तृतीय समय की उत्कृष्ट उदय कृष्टि अनंतगुणाहीन है ।

इस प्रकार तात्कालिक उत्कृष्ट उदय से उत्कृष्ट बंध तथा विवक्षित उत्कृष्ट बंध से अनंतर उत्कृष्ट उदय अनंत-अनंत गुणाहीन होता जाता है । परिणामों की विशुद्धि के माहात्म्य से यह अनंतगुणाहीनपना संभव है ।

उत्कृष्ट उदय से उत्कृष्ट बंध



जघन्य बंध से जघन्य उदय





जघन्य बंध-उदय कृष्टि का विचार

प्रथम समय की जघन्य बंध कृष्टि से तात्कालिक जघन्य उदय कृष्टि अनंतगुणाहीन है।

प्रथम समय की जघन्य उदय कृष्टि से द्वितीय समय की जघन्य बंध कृष्टि अनंतगुणाहीन है।

द्वितीय समय की जघन्य बंध कृष्टि से तात्कालिक जघन्य उदय कृष्टि अनंतगुणाहीन है।

द्वितीय समय की जघन्य उदय कृष्टि से तृतीय समय की जघन्य बंध कृष्टि अनंतगुणाहीन है।

इस प्रकार तात्कालिक जघन्य बंध से तात्कालिक जघन्य उदय, विवक्षित जघन्य उदय से अनंतर समय का जघन्य बंध अनंत-अनंत गुणाहीन होता है ।

इस प्रकार का कथन क्रोधवेदक के अंतिम समय तक जानना ।